प्रकाशक—

मैनेजर—

जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक-ग्रन्थमाला,

कुंदीगर भैरवजी का रास्ता, जैन धर्मशाला

जयपुर सिटी (राजपूताना)

मुद्रक—

ज्योतीप्रसाद गुप्त,

महावीर प्रेस, किनारी बाजार

* श्री सज्झाय-संग्रह *

संग्रहकर्त्ता—

विदुषी साध्वी श्रीमती विनयश्रीजी महाराज।

जयपुर के सुप्रसिद्ध जौंहरी सेठ कालूरामजी केसरी-चन्दजी जुनीवाल फार्म के मालिक श्रीमान् सेठ जसराजजी जुनीवाल की पूर्ण द्रव्य सहायता से अपनी स्वर्गस्थ धर्मपत्नी श्रीमती दौलतबाई के स्मरणार्थ।

प्रसिद्धकर्त्ता—

मैनेजर-जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रंथमाला, जयपुर सिटी (राजपूताना)

संवत् १९८८ वीर निर्वाण सं० २४५७ इ० सन् १९३१

मूल्य-सदुपयोग

अनुक्रमणिका।

विदुषी साध्वी श्रीमती प्रवर्त्तिनी श्रीसुवर्ण श्रीजीमहाराजसा।

जन्म—
सं० १९२७
ज्येष्ठ वदि १०

दीक्षा—
सं० १९४६
मार्गशिर शुदि ५

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

श्री सज्झाय-संग्रह ।

(१) शान्त सुधारस भावना ।

शान्त सुधारस सेवियेरे लाल, कीजे एहसुं प्रीत सुखकारी रे। ब्रह्म मुहूर्त्त प्रातःकालनो रे लाल, तिहां कीजे एह रीत सुखकारी रे ॥शांत०॥१॥ आलस निद्रा दो तजेरे लाल, आतम चिंतक होय सुखकारो रे। स्थिर मन तन वचने करीरे लाल, ज्ञाननयन सुं जोय सु० ॥ शांत०॥२॥ कामीने वादी हुवे रे लाल, दंभी लोभी लोल सु०। वहिर्मुखी कुमति सदा रे लाल, गीत गायन रंग-रोल सु० ॥शांत०॥३॥ मुंजाणो इंद्रिय विषे रे लाल, मानी क्रोधनो गेह सु०। विश्वासघाती वक्रता रे लाल,

तुरत दिखावे छेह सु० ॥शांत०॥४। एहवां दोष जिहां नहीं रे लाल, तेहिज पुरुष प्रधान सु० । रोष धरे नहीं दुहव्या रे लाल, मान दिया नहीं मान सु० शान्त०॥५॥ मैं कुण किहाँ से आवियो रे लाल, कुण छै माहरो रूप सु० । मित्र शत्रु कुण माहरे रे लाल, मोह माया ए कूप सु० ॥शान्त॥६॥ संबल साथे शुं हगे रे लाल, कई योनि में जाय सु० । वैरागे मन वालियो रे लाल, इम आतमसु ध्याय सु० ॥शान्त०॥७॥ द्रव्यनयात्म आतमा रे लाल, एक निश्चय नहीं भेद सु० । व्यवहारे बहु भेद छे रे लाल, तिण मांहि भव खेद सु० ॥शान्त०॥८॥ अन्तरंग बहिरंगनो रे लाल, धर्मपटंतर जोय सु० । परमाणु मेरु शैलनो रे लाल, एवडो अंतर जोय होय सु० ॥शान्त०॥९॥ काने पाप सुणे नहीं रे लाल, परदोष देखे न कोय सु० । पण्डित पण धरे मौनता रे लाल, समरस साधे सोय सु० ॥शान्त०॥१०॥ साध्य दशा साधक भजे रे लाल, अभ्यासे नर जेह सु० । इंद्रियनिवृत्ति वश हुवे रे लाल, देखे स्वरूप ने तेह सु० ॥शान्त०॥११॥ बहिरात्मता छोडी ने रे लाल, अन्तर आत्म लीन सु० । रूपातीत ध्यान ध्यावता रे लाल, छोड़े प्रथम ध्यान तीन सु० ॥शान्त॥१२॥ ते परमात्मता भजेरे लाल, समरस साधक जेह सु० । दोष

सकल दूर हुवेरे लाल, आवे ज्ञान अर्हंह सु० ॥ शान्त० ॥१३॥ त्रिहुं भेदे सवि जीव छैरे लाल, भव्य अभव्य प्रकार सु० । भव्य ते सिद्ध होशे सहि रे लाल, अभव्य फिरे संसार सु० ॥ शान्त० ॥१४॥ सिद्ध ते तीन प्रकार छैरे लाल, दूर आसंन ने मध्य सु० । पुद्गल अर्द्ध सिझसेरे लाल, अन्तर कहिये सिद्ध सु० ॥ शान्त० ॥१५॥ अन्तरे मुहूर्त्त सिझसेरे लाल, ते आसंन कहेवाय सु० । ए त्रिहुं विचे जे हुवेरे लाल, मध्यम सिद्ध सुहाय सु० ॥ शान्त० ॥१६॥ इहां मध्यम सिद्धनो कहुंरे लाल, आतमनो अधिकार सु० । मोह विवेक हंस चेतनारे लाल, वली एहनो परीवार सु० ॥ शान्त० ॥१७॥ भविक भणी प्रतिबोधवारे लाल, कल्पना कीधी एह सु० । यान बोल्या पल्लव भणीरे लाल, ए पण दृष्टान्त तेम सु० ॥ शान्त० ॥१८॥ परमार्थ साधन भणीरे लाल, कीजे एह उपाय सु० । जन्म जरा दुःख मेटियेरे लाल, ज्ञानलब्धि सिद्ध थाय सु० ॥ शान्त० ॥१९॥ आतम नो अनुभव हुवेरे लाल, पाप तिमिर दुःख दूर सु० । धर्ममंदिर ज्ञान सेवतारे लाल, शाश्वत सुख भरपूर सुखकारी रे ॥ शान्त० ॥२०॥ इति ।

(२) स्थुलीभद्र स्वामी की सज्झाय ।

श्री स्थुलीभद्र मुनिगण में सिरदार जो, चौमासो आयेने कोश्या घेर जो, चित्रामण शालाए तप जप आदर्यां जो । आदरियां व्रत आव्या छे अम घेर जो, सुंदर सुंदरी चम्पक वरणी देह जो, हम तुम सरिखो मेलो आ संसार में जो ॥१॥ संसार में जाण्यो सकल स्वरूप जो, दर्पणनी छाया में जेहवो रूप जो, सुपनानी सुखडली भूख भांगे नहीं जो ॥२॥ ना कहेशो तो नाटक करशुं आज जो, बारह वर्षनी माया छे मुनिराज जो, ते छोड़ी किम जाउं हुं आशा भरी जो ॥३॥ आशा भरियो चेतन काल अनादि जो, भमियो धर्मने हीन थयो प्रमादी जो, न जाणी में तो सुखनी करणी जोगीनी जो ॥४॥ जोगी तो जंगल में वासो वसिया जो, वेश्याने मंदिरे भोजन रसिया जो, तुमने दीठा एहवा संजम साधतां जो ॥५॥ साधु सो संजम इच्छारोध विचारी जो, कुर्मापुत्र थया नाणी घरबारी जो, पाणी माहि कोरो पंकज जाणिये जो ॥६॥ जाणी येतो सघली तुमारी वात जो, मेवा मीठा रसवंता बहु जात जो, अमरभूषण नित नवली भांते लावता जो ॥७॥ लावतां तो देती आदरमान जो, काया जाणे रंग पतंग समान जो, टालीने शी करवी एहवी प्रीतड़ी जो ॥८॥ प्रीतलड़ी

तो करतां रंगभर सेज जो, रमताने देखाडतां घणुं हेत जो, रीमारणी मनावी मुज ने संभरे जो ॥९॥ संभरे तो मुनिवर मनडुं वाले जो, ढांकी अग्नि उघाडे परजाले जो, संजम मांहि एह छे दूषण मोटकुं जो ॥१०॥ मोटकुं तो आव्युं नंदन तेडुं जो, जाते ने कहिं वहे तुमारो मनडुं जो, मैं तुमनं तिहां कौल करीने मोकल्या जो ॥११॥ मोकल्या तो मार्ग मांहि मलिया जो, शंभूति आचारज ज्ञानी वलिया जो, संजम दीधुं समकित तेहने शीखव्युं जो ॥१२॥ शीखव्युं तो कही देखाडो हमने जो, धर्म करंता पुण्य वडेरो तुमनं जो, समताने घर आवी कोश्या एम वदे जो ॥१३॥ वदे मुनिवर शंकाने परिहार जो, समकित मूले श्रावकनां व्रत बार जो, प्राणातिपातादिक थुलथी उच्चरे जो ॥१४॥ उचरे तो वीत्यो छै चौमासो जो, आणा लईने आव्या गुरुने पास जो, श्रुतनाणी कहेवाणा चउदे पूर्वी जो ॥१५॥ पूर्वी थईने तार्यां प्राणी थोक जो, उज्वल ध्याने तेह गया देवलोक जो, ऋषभ कहे नित तेहने हो जो वंदना जो ॥१६॥ इति ।
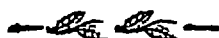
(३) वज्रस्वामी की सज्झाय।

सांभल जो तुमे अद्भुत वातां, वयरकुंवर मुनिवरनी रे॥ षट् महिनाना गुरु-झोलीमां, ओवे केली करन्ता रे। तीन वर्षना साध्वी मुख थी, अङ्ग इग्यारे भणन्ता रे॥सां० ॥१॥ राजसभामां नवि क्षोभाणा, मात सुखडली देखी रे। गुरुए दीधो ओघो मुंहपत्ति, लीधां सर्वे उवेखी रे॥सां० ॥२॥ गुरु संघाते विहार करे मुनि, पाले शुद्ध आचार रे। बालपणा थी महा उपयोगी, संवेगी सिरदार रे॥सां०॥३॥ कोलापाकने घयवर भिक्षा, दोय ठामे नवि लीधी रे। गगन-गामिनी वैक्रियलब्धि, देवे जेने दीधी रे॥सां०॥४॥ दश पूर्व भणिया जे मुनिवर, भद्रगुप्त गुरु पासे रे। क्षीरासव प्रमुख जे लब्धि, प्रकट जास प्रकाश रे॥सां०॥५॥ कोडि सैंकड़ा धनने संचे, कन्या रुकमणी नामे रे। सेठ धन्ना वह दीये पण न लीये, वधते शुभ परिणाम रे॥सां०॥६॥ देई उपदेश ने रुकमणी नारी, तारी दीक्षा दीधी रे। युगप्रधान जे विचरे जग में, सूरज तेज प्रतापी रे॥सां० ॥७॥ समकित शियल-तुम्ब धरी करमां, मोहसागर कर्यो ओछो रे। ते किम डूबे नार-नदीमां, एह तो मुनिवर मोटो रे॥सां० ॥८॥ जेणे दुर्भिक्षे संघ लईने, मूक्यो नगर सुकाल रे।

शासन शोभा उन्नति कारण, पुण्य पद्म सुविशाल रे ।।सां० ।।६।। बौद्धरायने पण प्रतिबोध्यो, कीधो शासनरागी रे। शासन शोभा जयपताका, अम्बर जईने लागी रे ।।सां० ।।१०।। विसर्यो सूंठ गाठियो काने, आवश्यक वेला जाणी रे । विसरे नहि पण एह विमरियो, आयु अल्प पिछाणी रे ।।सां० ।।११।। लाख सोनैये हांडि चढ़े जिम, बीजे दिवस सुकाल रे। इम सँभलावी वीरसेन ने, जाणी अणसण काल रे ।।सां० ।।१२।। रथावर्त्त गिरि जइ अणसण कीधो, सोहम हरि तिहाँ आवेरे। मर्दनिणा पर्वतने टईने, मुनिवर वन्दे भावे रे ।।सां० ।।१३।। धन्न सिंहगिरि-सूरि उत्तम, जेहना एह पटधारी रे। पद्मविजय कहे गुरुपद-पंकज, नित्य नमिये नरनारी रे ।।सां०।।१४।।इति।

---

(४) सुबाहुकुमार की सज्झाय।

हवे सुबाहु कुंवर इम विनवे, अमे लेशुं संयम भार माडी मोरी रे। मा मैं वीरप्रभुनी वाणी साँभली, तेणे में जाण्यो अथिर संसार माडी मोरी रे। हवे हुँ न राचुं संसारमां ।।१।। हांरे जाया तुझ विना सूना मन्दिर मालियां, जाया तुझ विना सूनो संसार जाया मोरा रे। माणक

मोती ने मुद्रिका, काँई ऋद्धि तणो नहिं पार जाया मोरा रे। तुझ विना घड़िय न नीसरे ॥२॥ हांरे माजी तन धन जोवन कारमो, कारमो कुटुम्ब परिवार माडी मोरी रे। कारमॉ सगपणमॉ कुण रहे, मैं तो जाण्यो अथिर संसार माडी० हवे० ॥३॥ हांरे जाया संजम-पन्थ घणो आकरो, व्रत छे खॉडानी धार जाया०। वावीस परिसह जीतवा, रहेवुं छे वनवा न जाया० तुझ० ॥४॥ हांरे माजी वनमॉ रहे छे जिम मृगला, तेहनी कोण करे छे संभाल माडी०। वन-मृगनी पेरे चालस्युं, अमे एकलडॉ निरधार मा० हवे० ॥५॥ हारे माजी नरक निगोदमॉ ऊपनो, अनन्त अनन्ती वार मा०। छेदन भेदन वहु सह्या, कहताँ नावे पार मा० हवे० ॥६॥ हांरे माजी काची ते काया कारमी, सड़ी पड़ी विणसी जाय मा०। जीव जास्ये ने काया पड़ी रहेशे, मुवा पीछे वाली करे राख मा० हवे ॥७॥ हांरे जाया पॉचसौ पॉचसौ नारियाँ, रूपे ते रम्भा समान जा०। ऊँचा ते कुलनी ऊपनी, रहेवाँ पॉचसौ २ महेल जा० तुझ० ॥८॥ हांरे माजी घरमॉ निकले एक नागिणी, सुखे निद्रा न आवे लगार मा०। तो पॉचसौ नागिणियों में किम रहुँ, मारूं मनडुं आकुल व्याकुल थाय मा० हवे० ॥९॥ हांरे जाया एटला दिवस हुँ जाणती, रमाडीश वहू केरा

वाल जा० । दिण दिवस अटारो आवियो, तुं ले छे संयम-भार जा० तुझ० ॥१०॥ हांरे माजी मुसाफिर आव्यो कोई परुण लो, फरी भेगो थाय न थाय मा० । एम मानव-भव पामवो दोहिलो, धर्म विना दुर्गति जाय मा० हवे० ॥११॥ हवे पाँचसौं नारियाँ इम विनवे, तेमाँ वडेरी करे रे जवाव वालम मोरा रे । स्वामी तुमे सयम लेवा संचर्यां, वालम अमने कोण आधार वालम मोरा रे । वालम विना किम रही सकूं ॥१२॥ हांरे माजी मात-पिता ने भाई बेनडी, नारी कुटुम्ब परिवार मा० । अन्त समय अलगा रहे, एक जैन-धर्म तरणतार मा० हवे० ॥१३॥ हवे धारणी माता इम विनवे, यह पुत्र न रहे संसार भविक जन रे । एक दिवस तुं राज भोगवी, संयम लीधो महावीर स्वामी पास भविक जन रे । सोभागी कुंवरे सजम आदर्यो ॥१४॥ तप जप संयम आदर्यो, आराधी गया देवलोक भविक जन रे । पन्नरे भव पूरा किया, महाविदेह क्षेत्रमाँ जासे मोक्ष भविक जन रे । सोभागी कुंवरे संजम आदर्यो ॥१५॥ इति ॥

—— .० ——

(५) श्री जम्बूस्वामी की सज्झाय ।

राजगृही नगरी का वासी, घर में लीलविलासी ।
ऋषभदत्त तो तात जम्बूजी का, धारिणी ज्यारी माता ॥
तुम पर वारी, वारी हो जम्बूजी वैरागी ॥ तुम० ए आँकणी

॥१॥ आठ सगाई करी रे कुंवर की, सुन्दर रूपरसाला । हाथ काम जब लियारे कुंवर का, शुभ मुहूर्त्त सावो दिखायो ॥तुम०॥२॥ बंदोला खावेने गुड़िया उड़ावे, नारी मंगल गावे । सुधर्मास्वामी राजगृही नगरी पधार्यो, लोक बन्दन कुं चाल्या ॥तुम०॥३॥ जम्बू कुंवर तो वन्दन कुं चाल्या, गुरु वांदी चित्त लाया । सुधर्मास्वामी उपदेश सुणायो, जग सुपना की माया ॥तुम०॥४॥ वाणी सुणीने भीनारे कुंवर जी, शियल रूचीने घर आया । कहे माता जी ने मैं तो संयम लेस्युं, आज्ञा दीजे ढील न कीजे ॥तुम०॥५॥ अपूर्व वचन जब सुण्या रे कुंवर का, माता जी बहु मूर्छाया । दीक्षा की बात मती काढोरे जाया, नार्यां परणीने घेर लावो ॥तुम०॥६॥ हाथ जोड़ी ने कहे रे कुंवरजी, साँभल जो मोरी माजी । तन मन में तो शियल रूच्यो छे, परणाई ने कांई होगो राजी ॥तुम०॥७॥ माता पिताजी के वचनसुं परण्या, नार्यां आईने पाय लागी । आज्ञा लेईने जम्बू महल पधार्या, नार्यांने कहे अलगी रहे जो ॥तुम०॥८॥ छपन्न कोड सोनैया घर में, निनाणु क्रोड़ मेलाई । रत्न जटित को महल पियुजी, फूलड़ा सेज बिछाऊँ ॥तुम०॥९॥ इन्द्र-धनुष ज्युं जोवन दलटे, नयणे काजल रल के । हो प्रीतम जी माँसु हँसकर बोलो, गाँठ हिया की खोलो ॥तुम०॥१०॥

बादला दाई रूप बिलाये, नदियाँ जल जोबन जावे। काल अणचिन्त्यो पकड़ ले जासी, कुण राजा कुण रङ्क ॥तुम० ॥१८॥ चन्द्रवदनी मृगलोचनी बाला, सुन्दर रूप रसाला। बेल गर्भसी हुई सुकमाला, हर्ष धरी ने मुखड़ें बोलो॥तुम० ।१२॥

(ढाल दूजी)—ए करस्याँ तो माँसु हँसकर बोलो, पीछे लीजो जी धर्म को ओलोरा पियुजी वाणी सुणो ॥१॥ थें तो होय गया धर्मना रागी, माने उभाही करदी त्यागीरा पियुजी वा० ॥२॥ थाने सुधर्मा स्वामी भरमाया, सासु धारिणी राणीरा जाया रे पियुजी० ॥३॥ माने राते परणी ल्याया, मैं तो नहीं घाल्यो मुख में पाणीरा ॥पियु०॥४॥ मैं तो रमणी गमणी ठमणी, मैं तो आठुं ही केसर वरणीरा पियु० ॥५॥ मै तो आठुं ही ऊभी ढोल्या दोरू, मांसु हँसकर मुखड़े बोलोरा पियु० ॥६॥ मैं तो आठुं ही लागो थाने खारी, माने झहर जड़ी जिम जाणीरा पियु० ॥७॥ मैं तो कब लग भरमाई ने राखो थाने, नहीं तो लारे ले चालो मानेरा ॥ पियु० ॥८॥

(ढाल तीजी)—आठ कथा तो कहे रे सुन्दरिया, आठुं ही जम्बू कुमारा। काम भोग है महा दुःखदाई, फल किंपाक कुण चाखे तुम पर वारी० ॥१॥ शियल रत्न मैं तो परख लियो है, काच मणि कुण जेले। दाख अमृत

रस मेवा तजी ने, निंबोली कौन खावे ॥तु०॥२॥ नारी जपारो दोहिलो पियुडा, पियु विना कौन आधार । लोग हँसे ने मुझ जोबन वेरे, भलो नहीं रे घर वासो ॥तु०॥३॥ किस्यो पियर ने किस्यो जी सासरियो, पियु विना कौन आधारो । इण संसार में पियू विना नारी, सब को लागे खारी पि० ॥४॥ सजोडा से जम्बू महल पधार्या, प्रभव आयो रे धन लेवा । धन जले ताँ जागा पावन उठ्या, आय जम्बू जी ने पूछे ॥तु०॥५॥ प्रभव कहे माकने दोय छे विद्या, एक विद्या माने दीजो । जम्बू कहे माकने विद्या नहीं छे, संसार में कुण राचे ॥तु०॥६॥ राते परण्या थे आठुं ही नार्यां, काँई छोडो रे भोला भाई । घर में माया ने कोमल काया, काँई छोडो रे निरधार ॥तु०॥७॥ आयुखो रे भाई अंजली को पाणी, काया काच की शीशी । इम जाणी हम हुआ रे वैरागी, दीनो संसार त्यागी ॥तु०॥८॥ बात सुणी ने बुज्या हो प्रभव जी, हाथ जोड़ी ने इम कहताँ । पाप कर्म में तो कीधाँ रे घणेरा, था साथे संजम लेश्याँ ॥तु०॥९॥ पाँच से चोर सत्ताईस जणासुं, संजम लियो सुखकार । चरम केवली हुआ रे जंबू जो, दीनी संसार ने पूंठ ॥तु०॥१०॥ शिवरमणी तो वर्या जो जम्बू जी, सादी अनन्ती वार । ऐसा मुनि ने होज्यो जी वंदना, नित्य ऊठी प्रभात ॥तु०॥११॥इति॥

(६) ढंढणऋषि जी की सज्झाय।

ढंढणऋषि जी ने वंदणा हुं वारिलाल, उत्कृष्टो अणगार रे हुं वारिलाल। अभिग्रह लीधो एहवो हुं वारिलाल, लश्युं शुद्ध आहार रे हु वारिलाल ॥१॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं०, न मिले शुद्ध अ.ह.र रे हुं०। भूल न ले अण सूजतो हु०, पजर कीधो गात्र रे हु०। ढं०॥२॥ हरि पूछे श्री नेम ने हु०, मुनिवर सहस अढार रे हुं०। उत्कृष्टा कुण एहमां हुं०, मुझने कहो विचारी रे हुं०॥ढं०॥३॥ ढंढण ऋषिको दाखियो हुं०, श्रीमुख नेमजिणंद रे हुं०। कृष्ण उमायो वाद.ा हुं०, धन्य जादव कुलचन्द रे हुं०॥ ढं०॥४॥ गलिया रे मुनिवर मिल्या हुं, वांद्य. कृष्ण नरेश रे हु०। कीण ही मिथ्यात्वी देखी ने हुं०, आण्यो भाव विशेष रे हुं०॥ढं०॥५॥ मुझ घर आवो साधु जी हुं०, ल्यो मोदक छे शुद्ध रे हुं०। मुनिवर वोहरी पांगुर्या हुं०, आया प्रभु जी ने पास रे हुं०॥ढं०॥६॥ मुझ लब्धे मादक मिल्या हुं०, कहो ने तुम कृपाल रे हुं०। लब्धि नहीं वच्छ ताहरी हुं०, श्रीपति लब्धि निधान रे हुं०॥ ढं०॥७॥ एह लेवा जुगतो नहीं हुं०, चाल्या परठवा काज रे हुं०। ईंट निवाहे जायने हुं०, चूरे कर्म समाज रे हुं०॥ढं०॥८॥ आणी चढती भावना हुं०, पाम्या केवल नाण रे हुं०। ढंढणऋषि मुग गया हुं, वहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ढं०॥९॥ इति।

(७) धन्नाजी की सज्झाय ।

श्री जिन वाणी रे धन्ना, अमीय समाणी मोरा नंदन। मनडै तो मानी रे नंदन ताह रैं ॥ १ ॥ तुं अति ही वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनडो रे किम पच्चाववुं ॥ २ ॥ दस दिसि दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन । अनुमति देतां रे जीभ वहै नहीं ॥ ३ ॥ बत्तीमे नारी हो धन्ना, अति ही पियारी मोरा नंदन । वाणी तो वोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मोरा नदन। गज गति चाले रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर धन्ना, ए सुख सज्जा मोरा नंदन । कोडी वत्तीसे धननो तुं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जाणो मोरा नंदन । भोगवी लेजो रे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नही य सुहेलो मोरा नंदन । सुगम नहीं छै रे साधु कहा वणो ॥ ८ ॥ घर घर भिक्षा हो धन्ना, गुरु तणी शिक्षा मोरा नंदन । कहनी तो रहणी रे दोइ छै सारखी ॥ ६ ॥ इक वार सुणी ये हो धन्ना, आगम भणीये मोरा नंदन । जिनवर जाणो हो दुक्कर जोग छै ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परिसह सहनो मोरा नदन । कोमल केसां रे लोच करावणो ॥११॥

साचो तें भाख्यो हो अम्मा, झूठ न आख्यो मोरी अम्मा। दुक्कर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा, झूठ न आखी मोरी अम्मा। कायर मारग जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हो अम्मा, नहीं परमारथी मोरी अम्मा। वीर वखाण्यो रे परषदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥ मैं इम जाण्यो हे अम्मा, वीर वखाण्यो मोरी अम्मा। ए धन जोवन आयु थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे मोरी अम्मा। जो खिण जाई सो फिर आवे नहीं ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा, जीव सुख पायो मोरी अम्मा। संजम लीधो रे मनमां गहगह्यो ॥ १७ ॥ छट्ठ २ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा। वीर वखाण्यो रे सुर नर आगले ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा। अंग इग्यारह अरथ रूडा भणे ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा, नव पखवाड मोरी अम्मा। मास संथारो हो स्वारथसिद्धि लह्यो ॥ २० ॥ इति।

——*——

(८) सीता सती की सज्झाय।

जल जलती मिलती घणी रे, झाला झाल अपार रे सुजाण सीता। जाणे केसू फूलिया रे लाल, राता खैर

अंगार रे सुजाण सीता ॥१॥ धीज करे सीता सती रे लाल, शील तणे परिमाण रे सु० । लच्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणा राण रे सु० ॥२॥ स्नान करी निर्मल जले रे लाल, पावक पासे आय रे सु० । ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे सु० ॥३॥ नर नारी मिलिया घणा रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे सु० । भस्म हुसी इण आग में रे लाल, राम करे अन्याय रे सु० ॥४॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल, सुपने ही अन्य कोय रे सु० । तो मुझ अग्नि प्रजालज्यो रे लाल, नहीं तो पाणी होय रे सु० ॥५॥ इम कही पैठो आग में रे लाल, तुरत अग्नि थयो नीर रे सु० । जाणे द्रह जलसुं भर्यो रे लाल, झोले धर्म सुधीर रे सु० ॥६॥ देव कुसुम वर्षा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे सु० । सीता धीजे उतरी रे लाल, साख भरे संसार रे सु० ॥७॥ रलियायत सहु को थया रे लाल, सगले थया उच्छरंग रे सु० । लच्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे सु० ॥८॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शीयल कहाय रे सु० । कहे जिनहर्ष सती तणा रे लाल, नित्य प्रणमीजे पाय रे सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

—:o:—

(६) पुनः सीता सती की सज्झाय ।

अरे रावण तूं धमकी दिखाता किसे, मुझे मरणे का खौफ खतर ही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना, तुझे होने की अपनी खबर ही नहीं ॥१॥ क्या तूं सोने की लंका का मान करे, मेरे आगे यह मट्टी का घर ही नहीं । मेरे मन का सुमेरु हिलेगा नहीं, मेरे मन में किसी का भी डर ही नहीं ॥२॥ तूने सहस अठार जो राणी वरी, हाय ! उनपे भी तुझको सबर ही नहीं । परतिरिया पे तेने जो ध्यान दिया, क्या नर्क निगोद का खतर ही नहीं ॥३॥ आवे मिलके जो इन्द्र नरेन्द्र सबी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरे । तेरी हस्ति है क्या सिवा रामपिया, मेरी नजरों में कोई वशरही नहीं ॥४॥ क्यों न जीत स्वयंवर तू लाया मुझे, मेरी चाह थी मन में जो तेरे बसी । था तू कौन शहर मुझे दे तो बता, क्या स्वयंवर की पहुँची खबर ही नहीं ॥५॥ हुआ सो तो हुआ अब मान कहा, मुझे राम पे जल्दी से दे तू पठा । कहे न्यामत वगरना तूं देखेगा यह, तेरे शिरकी कसम तेरा शिर ही नहीं ॥ ६ ॥ इति ॥
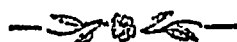
(१०) पुनः सीता सती की सज्झाय ।

जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतरयामी । पालव मारो मेलने पापी, कुल ने लागे छे खामी ॥ अडशो मांजो, मांजो मांजो मांजो अडशो मांजो ॥ महारो नाहलीयो दुहवाय अडशो मांजो, मांजो मांजो मांजो अडशो मांजो । मने संग कहनो न सुहाय अ०, मारुं मन माहे थी अकुलाय अ० ॥१॥ मेरु महिधर ठाम तजे जो, पत्थर पंकज ऊगे । जो जलधि मर्यादा मूके, पांगुलो अंबर पूगे ॥अ०॥२॥ तो पिण तूं सांभल रे रावण, निश्चय शीयल न खंडु । प्राण अमारो परलोक जाये, तो पिण सत्य न छंडु ॥अ०॥३॥ कुण मणिधरनी मणि लेवा ने, हैडे वाले हाम । सती संघाते स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ०॥४॥ परदारा नो संग करीने, आखो कुण उगरियो । ऊंडुं तो तूं जोवे आलोची, सही तुझ दहाडो फरियो ॥ अ०॥५॥ जनक सुता हुं जग सहु जाणे, भामण्डल छे भाई । दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लक्ष्मण करसे लडाई ॥अ० ॥६॥ हुं धणियाती पीयुगुण राती, हाथ छे माहरे छाती । रहे अलगो तुझ वचने न चालुं, कां कुलवाये छे काती ॥अ०॥७॥ उदय रत्न कहे धन्य ए अबला, सीता जेहनुं

नाम। सतीओं मांहि शिरोमणि कहिये, नित्य नित्य हो जा प्रणाम ॥अ०॥८॥इति॥

—

(११) अनाथी मुनि की सज्झाय।

श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनि एकन्त। वर-रूप कान्ते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥१॥ श्रेणिक राय हुं रे अनाथी निग्रन्थ, तिण मैं लीधो रे साधु जी नो पंथ ॥श्रे०॥टेर॥ इण कौशांवी नगरी वसेरे, मुझ पिता परगल धन। परिवार पूरे परवर्यो, हुं छुं तेहनो रे पुत्र रतन ॥श्रे०॥२॥ एक दिवस मुझ वेदना, उपनी तेह न खमाय। मात पिता सहु झूरी रह्या, तो ही दिण रे समाधि न थाय॥श्रे०॥३॥ गोरडी गुणमणि ओरडी, ओरडी अवला नार। कोरडी पीडा मैं सही, नहीं कीधी रे मोरडी सार ॥श्रे०॥४॥ वहु राजवैद्य वोलाविया, कीधला कोडि उपाय। वावन चंदन लेपिया, पिण तो ही रे दाह न जाय ॥श्रे०॥५॥ वेदना जो मुझ उपसमे, तो लेवुं संयम भार। इम चिन्तवता वेदना गई, व्रत लीधा रे हर्ष अपार ॥श्रे० ॥६॥ जग मांहि कोई केहनो नहीं, ते भणी हुं रे अनाथ। वीतराग नो धर्म वाहरो, कोई नहीं रे मुक्तिनो साथ॥ श्रे० ॥७॥ कर जोड़ी राजा गुण स्तवे, धन्य धन्य तुं

अणगार। श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचा रे नगर मझार ॥श्रे०॥८॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोड। गणि समयसुन्दर तेहना, पाय वंदे रे बे कर जोड़ ॥श्रे०॥६॥इति॥

(१२) रहनेमि की सज्झाय।

काउस्सग्ग ध्याने मुनि रहनेमि नामे, रह्यॉ छे गुफा मां शुभ परिणाम रे। देवरिया मुनिवर ध्यानमां रहे जो, ध्यान थकी होय भवनो पार रे ॥दे०॥ वर्षादे भीना चीवर मोकला करवॉ, राजुल आव्या तिण ठामरे ॥दे०॥१॥ रूपे रति रे वस्त्रे वर्जित वाला, देखो खोलाणो तेणे काम रे ॥दे०॥ दिलडुं खोलाणुं जाणी राजुल भाखे, राखो स्थिर मन गुणना धामरे ॥दे०॥२॥ यादव कुलमां जिनजी नेम-नगीनो, वमन करी छे मुझने तेणरे ॥दे०॥ बांधव तेहना तमे शिवादेवी जाया, एवडो पटंतर कारण केमरे ॥दे० ॥३॥ परदारा सेवी प्राणी नरकमां जाय, दुर्लभ बोधी होय प्रायरे ॥दे०॥ साध्वी साथे चूकी पाप जे बांधे, तेहनो छूट-कारो कदिय न थायरे ॥दे०॥४॥ अशुची कायारे मलमूत्रनी क्य री, तमने किम लागे एवडी प्यारी रे ॥दे०॥ हुंरे संयमी तमे महाव्रत धारी, कामे महाव्रत जासो हारी रे ॥

दे०॥५॥ भोग वम्यारे मुनि मनथी न इच्छे, नाग अगंधन कुलनी जेमरे।।दे०॥ धिक्धिक् कुल नीचा नेह थी निहाले, न रहे संयम शोभा एम रे ।।दे०॥६॥ एहवा रसीला राजुल वयण सुणीने, वुज्या रहनेमि प्रभुजी पासरे ।।दे०॥ पाप आलोय करी संयम लीधुं, अनुक्रमे पाम्या शिव आवास रे ।।दे०॥७॥ धन्य धन्य जे नरनारी शीयलने पाले, समुद्र तर्या समव्रत छे एहरे ।।दे०॥ रूप कहे तेहना नामथी होवे, अम मन निर्मल सुन्दर देहरे ।।दे०॥८॥इति॥

(१३) भरत चक्रवर्त्ती की सज्झाय ।

भरतजी मनही में वैरागी । मनही में वैरागी भरतजी म०।।टेक।। सहस वत्तीस मुकुटबंध राजा, सेवा करे वड़-भागी । चौसठ सहस्स अंतेउरी जाके, तोहि न हुआ अनु-रागी ।।भ०॥१॥ लाख चोरासी तुरंग जाके, छन्नु क्रोड है पागी । लाख चोरासी गज रथ सोहिये, सुरता धर्मसं लागी ।।भ०॥२॥ चार क्रोड मण अन्नज उपड़े, लून दश लाख मण लागे । तीन क्रोड गोकुल नित दूजे, एक क्रोड हलसागी ।।भ०॥३॥ सहस्स वत्तीस देश वड़भागी, भये सर्व के त्यागी । छिन्नु क्रोड गाँव के अधिपति, तोहि न

हुआ सरागी ॥भ०॥४॥ नवनिधि रत्न चोगडा वाजे, मन चिन्ता सब भागी । कनक कीर्त्ति मुनिवर वंदत है, देजो मुक्ति मै मॉगी ॥भ०॥५॥ इति ॥

—·※·—

(१४) वाहुवली की सज्झाय ।

वाहुवली चरित्र लीयोरे, साचो धरि वैराग । भरतेश्वर इम विनवे रे, वार वार पाय लाग ॥ हर्ष भर मुझसुं वोलज्यो रे ॥ वीर थाने वाबाजी री आण, थाने ऋषभदेवजी री आण । थे तो मकरो खेंचाताण, थे तो माहरो जीवन प्राण ॥ हर्ष० ॥ १ ॥ हुँ तो भाई थाहरो रे, जे मै कीधो दोष । तो पिण खमजो भाईडा रे, गिरुआ न करे रोस ॥ हर्ष० ॥ २ ॥ आवो वाह देई मिलारे, जोवो आंख उघाड़ । वोलो मीठा वोलडा रे, पूरो मननो लाड़ ॥हर्ष०॥३॥ खीलो नॉखु तोड़ने रे, जिम कुल जाये वेढ । नायो आयुधशालमॉ रे, ज्युं ब्राह्मण घर ढेढ़ ॥ हष० ॥ ४ ॥ भाभीना ओलंभडा रे, किम संभलाये कान । जातां पाव वहे नहीं रें, तुमने मूकी रान ॥ हर्ष० ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हुं हारियो रे, देव भरे छे साख । तुझ सरिखो जगको नही रे, मुझ सरिखा छे लाख ॥हर्ष०॥६॥ माथे सूरज आवीयो रे, पसीनो

सारो गात । वेसो भोजन जीमिये रे, खारक दाख निवात ॥ हर्ष० ॥ ७ ॥ तूं माहरे जीवन आत्मा रे, तूं हिज माहरे बाँह । दिशा सूनी भाई बिनारे, आवोने घर मांह ॥हर्ष०॥ ८ ॥ निनाणु एकण मते रे, मुझने लोभी जाँण । ते मुझने सहु परिहर्या रे, ज्यूं वर्षाले छाण ॥ हर्ष० ॥ ९ ॥ बोल घणाइं बोलिया रे, भरतेश्वर महाराज । हाथी ना दांत जे नाकल्यारे, ते पाछा नवि जाय ॥हर्ष०॥ १० ॥ अभिमानी शिर सेहरो रे, बाहुबल ऋषिराय । सीधा कर्म खपायने रे, विमल कीर्त्ति गुण गाय ॥हर्ष०॥ ११ ॥

(१५) पुनः बाहुबली की सज्झाय ।

राज तणारे अति लोभिया, भरत बाहुबली झूंझेरे । मुठिरे उपाडी मारवा, बाहुबल प्रतिबूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गज थकी ऊतरो, ब्राह्मी सुन्दरी इम भाखेरे । ऋषभ जिनेश्वर मोकली, बाहुबल ने पासे रे ॥ वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढ्या केवल न होसीरे ॥२॥ लोच करी चारित्र लियो, वली आयो अभिमानो रे । लघु बाँधव वांदूं नहीं, काउस्सग रह्यो शुभ ध्याने रे ।वी०। ॥ ३ ॥ वर्ष दिवस काउस्सग रह्या, वेलडिया विंटाणोरे ।

पंखी माला माँडिया, शीन तापस्त्र मुकाणारे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साध्वी वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मझारो रे । हय गय रथ सवि परिहर्या, पिण न मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मूक्यो निज अभिमानो रे । पांव उपाडी वांदवा, उपनो केवलनाणोरे ॥ वी० ॥६॥ पहुँता केवली पर्षदा, वाहुबली ऋषिराया रे । अजर अमर पदवी लहे, समयसुन्दर वंदे पाया रे ।वी०।७॥

—:*:—

(१६) अरणिक मुनिवर की सज्झाय ।

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड़के दाझे शिशोजी । पाय उवराणा रे वेलु परजले, तनसुकुमाल मुनीशोजी ॥ अ० ॥ १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूलज्युं, ऊभो गोखने हेठो जी । खरे दुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठोजी ॥अ०॥ २ ॥ वयण रंगीली रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण ठारो जी । दासी ने कहे जाव उतावली, ओ ऋषि तेडी आणो जी ॥अ०॥ ३ ॥ पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी । नव जोवन रस काया कांई दहो, सफल करो अवतारोजी ।अ० ॥ ४ ॥ चंद्रवदनी रे चारित्र चूकव्यो, सुख विलसे दिन

रातोजी । एक दिन गोखेरे रमतो सोगठे, तव दीठी निज मातो जी ॥अ०॥ ५ ॥ अरणिक अरणिक करती माय फिरे, गलिये गलिये मझारो जी । कहीं किण दीठो रे म्हारो अरणलो, पूछे लोक हजारो जी ॥ अ० ॥ ६ ॥ उतरी त्यांथी रे जननी ने पांय नम्यो, मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिक् धिक् पापी रे म्हारा जीवने, एह मैं अकारज कीधोजी ॥अ०॥ ७ ॥ अगनि धूखंती रे शीला ऊपरे, अरणिक अणसण कीधो जी । समय सुंदर कहे धन्य ते मुनिवरु, मन वंछित फल साध्यो जी ।अ०।-॥

(१७) सती चेलणा राणी की सज्झाय ।

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रन्थ । रात्रे वनमांहि काउस्सग्ग रह्यो जी, साधतो मुक्तिनो पंथ । । १ ॥ वीरे वखाणी राणी चेलणा जी, सतीय शिरोमणी जाण । चेडा राजानी साते सुता जी, श्रेणिक शीयल प्रमाण ॥ वीरे० २ ॥ शीत ठंठार सबलो पडे जी, चेलणा प्रीतम साथ । चारित्रयो चित्तमां वस्यो जी, सोवडि वाहिर रह्यो हाथ ॥ वीरे० ॥ ३ ॥ झबके जागी कहे चेलणा जी, किम करतो हुंसी तेह । कुसती मन मांहिं ए कुण वस्यो जी, श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वीरे० ॥ ४ ॥

अन्तेउर परो जालजो जी, श्रेणिक दियो रे आदेश। भगवंत सांसो भांजियो चमकियो चित्त नरेश ॥ वीरे० ॥ ५ ॥ वीर वाँदी वलतॉ थकॉ जी, पैसता नगर मझार। धुंवानो धोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥वीरे०॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार। समय सुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवतणो पार ॥ वीरे० ॥ ७ ॥

—— . ० ——

[१८] प्रभंजना कन्या की सज्झाय ।

गिरि वैताढ्य ने ऊपरे, चक्राँका नयरी रे लो, अहो च० । चक्रायुध राजा तिहां, जीत्या सब वयरिरे लो। अहो जी० ॥ १॥ मदनलता तस सुंदरी, गुणशील अचंभा रे लो, अहो गु० । पुत्री तम प्रभंजना, रूपे रति रंभा रे लो, अहोरू० ॥ २ ॥ विद्याधर भूचर सुता, बहु मली एक पंथे रे लो, अहो व० । राधावेध मंडावियो, वर वरवा खंते रे लो, अहो व० ॥ ३ ॥ कन्या एक हजार थी, प्रभंजना चाली रे लो, अहो प्र० । आर्यखंड मां आवतॉ, वनखंड विचाली रे लो, अहो व० ॥ ४ ॥ निग्रंथी सुप्रतिष्ठिता, बहु गुणणी संगे रे लो, अहो व० । साधु विहारे विचरती, वंदे मनरंगे रे लो, अहो वं० ॥ ५ ॥ आर्या पूछे एवडो,

उमायो श्यो छेरे लो, अहो उ० । विनये कन्या विनवे, वर वरवा इच्छे रे लो, अहो व० ॥ ६ ॥ ऐस्यो हित जाणो तुमे, एहथी नवि सिद्धि रेलो, अहो ए० । विषय हलाहल विष तिहाँ, शी अमृत बुद्धि रे लो, अहो शी० ॥ ७ ॥ भोग संग कारमा कह्या, जिनराज सदाई रे लो, अहो जि० । रागद्वेष संगे वधे, भव भ्रमण सदाई रे लो, अहो भ० ।८॥ राज सुता कहे साच ए, जो भाखो वाणी रे लो, अहो जो० । पण ए भूल अनादिनी, किम जाये छंडी रे लो, अहो कि० ॥९॥ जेह तजे ते धन्य छे, सेवक जिनजीना रे लो, अहो से० । अमे तस पुद्गल रस रम्या, मोहे लवलीना रे लो, अहो मो० ॥१०॥ अध्यातम रस पान थी, पीना मुनिराया रे लो, अहो पी० । ते पर परिणति तजी, निज तत्व समाया रे लो, अहो नि० ॥ ११ ॥ अमने पिण करवो घटे, कारण संयोगे रे लो, अहो का० । पण चेतनता परिणमें, जड़ पुद्गल जोगेरे लो, अहो ज० ॥ १२ ॥ अवर कन्या पण उच्चरे, चिंतित हवे कीजिये रे लो, अहो चि० । पछी परम पद साधवा, उद्यम साधी जेरे लो, अहो उ० ॥ १३ ॥ प्रभंजना कहे हे सखि, ए कायर प्राणी रे लो, अहो ए० । धर्म प्रथम करवो सदा, देवचंद्रनी वाणी रे लो, अहो दे० ॥ १४ ॥

ढाल २ जी—कहे साहुणी सुन कन्यकारे कन्या, ए संसार क्लेश । एहनें जे हितकारी गणेरे कन्या, ते मिथ्या आदेश रे ॥ सुज्ञानी कन्या, सांभल हित उपदेश । जग हितंकारी जिनेश छेरे कन्या, कीजे तसु आदेश रे ॥ सुज्ञानी कन्या, सां० ॥१॥ खरडीने वली धोववुं रे कन्या, तेह न शिष्टाचार । रत्नत्रयी साधन करो रे कन्या, मोहाधीनता वार रे ॥सु० सां०॥२॥ जेह पुरुष वरवा तणी रे कन्या, इच्छे छे ते जीव । स्यो सवंध पणे भणो रे कन्या, धारी काल सदीव रे ॥सु० सां०॥३॥ तव प्रभंजना चिन्तवे रे अप्पा, तू छे अनादि अनन्त । ते पण मुझ सिद्ध सत्ता समोरे अप्पा, सहज अकृत महन्त रे ॥सु० सां०॥४॥ भव भमतॉ सवी जीवथी रे अप्पा, पाम्यो सर्व सम्बन्ध । मात पिता भ्राता सुता रे अप्पा, पुत्रवधू प्रतिबन्धरे ॥सु० सां० ॥५॥ स्यो संवंध कहुं इहॉ रे अप्पा, शत्रु मित्र पण थाय । मित्र शत्रुता वली लहेरे अप्पा, एम संसरण स्वभाव रे ॥ सु० सां०॥६॥ सत्ता सम सवी जीव छेरे अप्पा, जोता वस्तु स्वभाव । एह माहरो एह पारको रे अप्पा, सवी आरोपित भाव रे ॥सु० सां०॥७॥ गुरुणी आगल एहवुं रे अप्पा, झूठुं केम कहेवाय । स्वपर विवेचन कीजता रे अप्पा, माहरो कोई न थाय रे ॥सु० सां०॥८॥ भोग्यपणुं

पण भूलथी रे अप्पा, माने पुद्गल खंध । हूं भोगी निज भावनो रे अप्पा, परथी नहीं प्रतिबंध रे ॥सु० सॉ०॥६॥ सम्यक् ज्ञाने वहेंचता रे अप्पा, हूं अमूर्त्त चिद्रूप । कर्त्ता भोक्ता तत्त्वनो रे अप्पा, अक्षय अक्रिय अरूप रे ॥सु० सां० ॥१०॥ जुदो सर्व विभावथी रे अप्पा, निश्चय निज अनुभूत । पूर्णानन्दी परणमे रे अप्पा, नहीं पर परिणती रूप रे ॥सु० सां०॥११॥ सिद्ध समो ए संग्रहे रे अप्पा, पररंगे पलटाय । संयोगी भावे करीरे अप्पा, अशुद्ध विभाव अपाय रे ॥सु० सॉ०॥१२॥ शुद्ध निश्चय नय करी रे अप्पा, आत्म भाव अनन्त । तेह अशुद्धनय करी रे अप्पा, दुष्ट विभाव महन्त रे ॥सु० सॉ०॥१३॥ द्रव्य कर्म कर्त्ता थयो रे अप्पा, नय अशुद्ध व्यवहार । तेह निवारो स्वपदे रे अप्पा, रमतॉ शुद्ध व्यवहारो रे ॥सु० सॉ०॥१४॥ व्यवहारे समरे थकी रे अप्पा, समरे निश्चयाचार । प्रवृत्ति समारे विकल्पने रे अप्पा, तेह स्थिर परिणति सार रे ॥ सु० सॉ०॥१५॥ पुद्गलने पर जीवथी रे अप्पा, कीधो भेद विज्ञान । बाधकता दूरे टलीरे अप्पा, हवे कुण रोके ज्ञान रे ॥सु० सॉ०॥१६॥ आलंबन भाव न वसे रे अप्पा, धर्म ध्यान प्रगटाय। देवचन्द पद साधवा रे अप्पा, एहिज शुद्ध उपाय रे ॥सु० सॉ०॥१७॥

[राग—धनासरी]

ढाल ३ जी—आयो आयो रे अनुभव आतम चो आयो, शुद्ध निमित्त आलंबन भजतॉं आत्मालम्बन पाया रे ॥ आ० ॥ १ ॥ आत्मा क्षेत्रे गुणपर्याय विधि, तिहाँ उपयोग रमायो। पर परिणति पर रीते जाणी, तास विकल्प गमायो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ पृथक्त्व वितर्क शुकल आरोही, गुण गुणी एक समायो। परजय द्रव्य वितर्क एकता, दुर्द्धर मोह खपायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अनन्तानुबंधो सुभटने काढी, दर्शन मोह गमायो। तिरिगति हेतु प्रकृति क्षय कीधी, थयो आत्म रस रायो रे ॥आ०॥४॥ द्वितीय तृतीय चोकड़ी खपावी, वेद युगल क्षय थायो। हास्यादिक सत्ता थी ध्वंसी, उदय वेद मिटायो रे ॥ आ० ॥५॥ थई अवेदी ने अविकारी, हण्यो संजल नो कषायो। मार्यो मोह चरण क्षायक करी, पूर्ण समता समायो रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ घन घाति त्रिक योधा लडिया, ध्यान एकत्व ने ध्यायो। ज्ञानावरणादिक भट पडिया, जीत निशान घुरायो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ केवलज्ञान दर्शन गुण प्रगट्या, महाराज पद पायो। शेष अघातिकर्म क्षीणदल, उदय अबध दिखायो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ सयोगी केवली थया प्रभंजना, लोकालोक जणायो। तीन काल की त्रिविध

वर्त्तना, एक समय उलखायो रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ सर्व साध्वी ये वंदना कीधी, गुणी विनय उपजायो । देव देवी स्तवे गुण स्तुति, जग जय पटह वजायो रे ॥ आ० ॥१०॥ सहस कन्या ने दीक्षा दीधी, आश्रव सर्व तजायो । जग उपगारी देश विहारी, शुद्ध धर्म दीपायो रे ॥आ०॥११॥ कारण योगे कारज साधे, तेह चतुर गाईजे । आत्म साधन निर्मल साधे, परमानंद पाईजे रे ॥आ०॥१२॥ एह अधिकार कह्यो गुण रागे, वैरागे मन भावी । वासुदेवहिंड तणे अनुसारे, मुनि गुण भावना भावी रे ॥आ०॥१३॥ मुनि गुण थुणतॉं भाव विशुद्धे, भाव विच्छेद न थाय । पूर्णानन्द इहां थी उलसे, साधन शक्ति जमावे रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ मुनि गुण गावो भावना भावो, ध्यावो सहज समाधि । रत्न त्रयी एकत्वी खेलो, मेटी उपाधि अनादि रे ॥ आ० ॥ १५ ॥ राजसागर पाठक उपगारी, ज्ञानधर्म दातारी, दीपचन्द्र पाठक खरतर वर, देवचन्द्र सुखकारी रे ॥ आ० ॥ १६ ॥ नयर लींबड़ी, मांहि रहीने, वाचंयम स्तुति गाई । आत्म रसिक श्रोता जन मनके, साधन रुचि उपजाई रे ॥ आ० ॥ १७ ॥ इम उत्तम गुण माला गावा, पावो हर्ष वधाई । जैन धर्म मार्ग रुचि करतॉं, मंगल लील सदाई रे ॥ आ० ॥ १८ ॥ इति ॥

[१६] नन्दीषेण मुनि की सज्झाय ।

राजगृह नगरी नो वासी, श्रेणिक नो सुत सुविलासी हो । मुनिवर वैरागी ॥ नन्दीषेण देशना सुणी भीनो, ना ना करताँ व्रत लीनो हो । मुनिवर वैरागी ॥ १ ॥ चारित्र नित्य चोखो पाले, संजम-रमणीसु माले हो ॥मु०॥ एक दिन जिन पाये लागी, गोचरीनी आज्ञा माँगी हो ॥ मु० ॥२॥ पाँगरियो मुनि वोहरेवा, क्षुधा वेदनी कर्म हणेवा, हो ॥मु०॥ ऊंच नीच मध्यम कुल मोटा, अटतो संजम रस लोटा हो ॥ मु० ॥३॥ एक ऊंचो धवल घर देखी, मुनि-वर पेठो शुद्धि गवेखी हो ॥ मु० ॥ तिहाँ जई दीधो धर्म-लाभ, वेश्या कहे इहाँ अर्थलाभ हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ मुनि मन अभिमान ज आण्यो, खंड करी नाख्यो तिण तोड़ी हो ॥मु०॥ सोवन वृष्टि हुई साढी बारे क्रोड, वेश्या वनिता कहे कर जोड हो ॥ मु० ॥ ५ ॥

ढाल २ जी—थे तो उभा रहीने अरज हमारी साँभलो साधुजी । थे तो मोटा कुलना जाण मूकी दो श्रामलो साधुजी ॥६॥ थे तो लई जावो सोवन कोडी गाडा ऊंटे भरी साधुजी । थारे केसरिये कशवीने कपड़े मोही रही साधुजी ॥७॥ थारी मूर्त्ति मोहनगारी जगत में सोहिये साधुजी । थारे आँखडियारो नीको पाणी लागणो साधुजी

॥८॥ थारो नवलो जोवन वेष विरह दुःख भांजणो साधु जी। ए तो जंत्र जडीत कपाट कूंची मैं कर ग्रही साधु जी ॥ ९ ॥ मुनि वलवा लाग्या जाम के मैं आडी ऊभी रही साधु जी। मैं तो ओछी स्त्रीनी जाति मति कही पाछली साधु जी। थे तो सुगुण चतुर सुजाण विचारो आगले साधुजी ॥ १० ॥ थे तो भोग पुरंदर हुँ पण सुंदरी ताहरी साधु जी। थे तो पेहरो नवलो वेश गेणा घणा जडावका साधु जी ॥ ११ ॥ मणि मुक्ताफल मुकुट विराजे हेम का साधु जी। अमे सजीये सोलह सिणगार के पियूरस अंगना साधु जी ॥ १२ ॥ जे होवे चतुर सुजाण के कदिय न चूक से साधु जी। एहवो अवसर साहब कदिय न आवशे साधु जी ॥ १३ ॥ इम चिंतवे चित्त मझार नंदीषेण वालह हो साधु जी। रहेवा गणिका ने धाम के थईने नाहलो साधुजी ॥१४॥

ढाल ३ जी—भोग कर्म उदय तस आव्या, शासन देवी संभलाव्यो हो मुनिवर वैरागी। रहेवा बारे वर्ष तस आवासे, वेष लई मुक्यो एक पासे हो ॥ मुनिवर वैरागी ॥ १५ ॥ दश नर दिनप्रति बूजे, दिन एक मूर्ख नवि बूझे हो ॥ मु० ॥ बूझतां हुई बहुवेला, भोजन नी हुई अवेला हो ॥मु०॥१६॥ कहे वेश्या ऊठो स्वामी, आज

दशमा तुमहीज कामी हो ॥मु०॥ वेश्या वनिता कहे धस-मसती, आज दशमो तुमहीज हसती हो ॥मु०॥१७॥ एह वयण सुणीने चाल्यो, फिर संजममें मन वाल्योहो ॥मु०॥ फिर संजम लियो उल्लासे, वेष लई गयो जिन पासे हो ॥मु०॥१८॥ चारित्र नित्य चोखूं पाली देवलोके गयो देई ताली हो ॥मु०॥ तप जप संयम क्रिया साधी, घणां जीवाने प्रतिबोधी हो ॥मु०॥१९॥ जयविजय गुरु शिष्य, तस हर्ष नमे निशदिश हो ॥मु०॥ मेरु विजय इम बोले, एहवा गुरुने कोण तोले हो ॥मु०॥ ॥२०॥ इति ॥

——:*:——

(२०) मेतारज ऋषि की सज्झाय ।

शम दम गुणना आगरुं जी, पंच महाव्रत धार । मास खमण ने पारणे जी, राजगृही नगरी मझार ॥१॥ मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ए आंकणी॥ सोनी ने घरे आवियाजी, मेतारज मुनिराय । जवलां घडतो उठी-योजी, वंदे मुनिना पाय ॥मे०॥२॥ आज फल्यो घर आंगणे जी, विणकाले सहकार । लो भिक्षा छे सूजतीजी, मोदक तणोरे आहार ॥मे०॥३॥ क्रौंच जीव जवलां चुग्या जी, वहोरी वल्या मुनिराय । सोनी मन शंका थई जी,

साधु तणो ए काम ॥मे०॥४॥ रीस करी ऋषिने कहेजी, द्यो जवलां मुझ आज । व्याध्रे शीर विंटियोजी, तडके नांख्यो मुनिराज ॥मे०॥५॥ फट फट फूटे हांडकां जी, तट तट तूटे चाम । सोनीये परिषह कीयो जी, साधु राख्यो मन ठाम ॥मे०॥६॥ धन्य धन्य ते महोटा जति जी, मन मां न आण्यो रोष । आत्म निंदा मुनि करेजी, सोनी नो नहिं दोष । ॥मे०॥७॥ गजसुकुमाल संतापिया जी, बांधी माटीनी पाल । खयर अंगारा शिर धर्या जी, मुक्ते गया मुनिराज ॥मे०॥८॥ वाघण देह विलुरियो जी, साधु सु-कोमल देह । केवल लही मुगते गया जी, इम अरणिक अणगार ॥मे०॥ ९ ॥ पालक पापी पिलीया जी, खंधक सूरिना शिष्य । अंबड चेला पांचसौ जी, नमो नमो तेह जगीश ॥मे०॥१०॥ एहवा ऋषि संभालता जी, मेतारज मुनिराय । केवल लही मुक्ते गया जी, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ मे० ॥ ११ ॥ जवलां देखी वींट में जी, मन में डर्यो रे सोनार । ओघो मुहपत्ति साधुना जी, लेई थयो अणगार ॥मे०॥१२॥ चारित्र पाली निर्मलो जी, थिर करी मन वच काय । राजविजय रंगे भणे जी, साधु तणी रे सज्झाय ॥मे०॥१३॥ इति ॥

——:०:——

[२१] खंधक मुनि की सज्झाय ।

नमो नमो खंधक महामुनि, खंधक क्षमानां भंडार रे । उग्र विहारे मुनि विचरतां, चारित्र खड्गनो धार रे ।।नमो०।।१।। सुमति गुप्तिने धार तो, जितशत्रु राजानो नंद रे । धारणी उदरे जनमियो, दर्शन परमानन्द रे ।। नमो०।। २ ।। धर्मघोष मुनि देशना, पामियो तिण प्रति- बोध रे । अनुमति लई मात तातनी, कर्मसुं युद्ध थयो योद्ध रे ।।नमो०।।३।। छट्ठ अट्ठम आदि करी, दुष्कृत तपे तनु शोष रे । रात्रि दिवस परिषह सहे, तो पिण मन नहीं रोष रे ।। नमो० ।। ४ ।। दव दीधा खीजड़ा देहमां, चालता खड खडे हाड रे । तो पिण तप तपें आकरां, जाणतो अथिर संसार रे ।।नमो०।।५।। इक समे भगिनी पुरी प्रते, आविया साधुजी सोय रे । गोख बैठी चिंते वेनडी, ए मुझ बांधव होय रे ।।नमो०।।६।। बेनने बांधव सांभर्यो, उलट्यो विरह अपार रे । छातडी लागी छे फाटवा, नयणे वहे जिम नीर रे ।।नमो०।।७।। राय चिंते मनमां इश्यो, ए कोई नागीनो यार रे । सेवक ने कहे साधु जी, ल्यावो जी खाल उतारी रे ।।नमो०।।८।।

ढाल २ जी—राय सेवक कहे साधु ने, लाकडी जीव हणसुं रे । अम ठाकुरनी ए छे आणा, ते अमे

आजे करसुं रे ॥१॥ अहो अहो साधु जी समता वरिया ॥ मुनिवर मन मांहि आणंद्या, परिषह आव्यो जाणी रे। कर्म खपावा अवसर एहवो, वली नहीं आवे प्राणी रे ॥ अहो०॥२॥ ए तो वलीय सखाई मलियो, भाई थकी भलेरो रे। प्राणी कायर पणो परिहरो, जिम न थाये भव फेरो रे ॥ अहो० ॥३॥ रायसेवक ने तव कहे मुनिवर, कठिन फरस मुझ काया रे। बाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहिये भाया रे ॥अहो०॥४॥ चार शरणा चतुर करीने, भवचरम आवंत रे। शुक्लध्यान सुं तान लगाव्युं काया वोसिराइ अंते रे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ चड चड चामडी तेह उतारे, मुनि समता रस झीले रे। क्षपकश्रेणी आरोहण करीने, कर्म कठिन ने पीले रे ॥ अहो० ॥ ६ ॥ चोथो ध्यान धरन्ता अन्ते; केवल लई मुनि सिद्धा रे। अजर अमरपद मुनिवर पाम्या, कारज सगला सिद्धा रे ॥ अहो० ॥ ७ ॥ हवे मुहपत्ति लोहिये खरडी, पंखीडें आमिष जाणी रे। राजद्वारे ते लई नांखी, सेवक लीधी ताणी रे ॥ अहो० ॥ ८ ॥ सेवक मुखथी वात सुणी ने, बहिने मुहपत्ति दीठी रे। निश्चय भाई हणियो जाणी, हीये उठी अंगीठी रे ॥ अहो० ॥ ६ ॥ विरह विलाप करे राय राणी, साधु नी समता बखाणो रे। अथिर संसार

स्वरूप ते जाणी, संयम ले राय राणी रे ।।अहो०।।१०।। आलोई पातिक सवि छंडी, कर्म कठिन ने नंदी रे । तप दुक्कर करी काया गाली, शिव सुख लहे आणंदी रे ।। अहो०।।११।। भवियण एहवा मुनिवर वंदी, मानव भवफल लीजे रे । कर जोड़ी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखियो कीजे रे ।। अहो० ।। १२ ।। इति ।।

[२२] कर्म की सज्झाय ।

देव दाणव तीर्थङ्कर गणधर, हरिहर नरवर सबला । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, सबल हुआ महा निबला रे ।। प्राणी कर्म समो नहीं कोई ।। १ ।। आदीश्वर ने कर्म अटाव्या, वर्ष दिवस रह्या भूख्या । वीर ने बारे वर्ष दुःख दीधा, उपना ब्राह्मणी कूखे रे ।।प्रा०।। २ ।। साठ सहस सुत मार्या एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा । सगर हुओ महापुत्र नो दुःखियो, कर्म तणा एह चाला रे ।।प्रा०।।३।। बत्तीस सहस देशारो साहिब, चक्री सनतकुमार । सोलह रोग शरीरे उपन्या, कर्म कियो तनु छार रे ।।प्रा०।।४।। कर्मे हवाल किया हरिचंद ने, वेची सुतारा राणी । बारे वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणी रे ।।प्रा०।।५।। दधिवाहन राजा नी बेटी, चावी चदनबाला । चौपद ज्युं

चौंवट वेचाणी, कर्म नणा एह चाला रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ संभूम नामे आठमो चक्री, कर्मे सायर नांख्यो । सोळे सहस्र यक्ष उभा देखे, पिण किणही नवि राख्यो रे ॥प्रा० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्मे कीधो अंधो । इम जाणी प्राणी थे कोई, कर्म कोई मति बांधो रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ छप्पन क्रोड यादव नो साहिब, कृष्ण महाबल जाणी । अटवी मांही मूवो एकलडो, विल विल करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ पांचे पांडव महा जुंजारा, हारी द्रौपदी राणी । बारे वर्ष लग वन रडवडिया, भमिया जेम भिखारी रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता, लछमणे रावण मार्यो । एकलडे नर सहु जग जीत्या, ते पिण कर्मसुं हार्यो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ लछमण राम महा बलवंता, वली सत्यवंती सीता । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, केतक वहु तस बीता रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ समकित धारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसके । धर्मी नर ने कर्म सतावे, कर्म सूं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ सतीय शिरोमणी द्रौपदी कहिये, जिन सम अवर न कोय । पांच पुरुष नो हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ आभा नगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद । माता कीधो पंखी कूकडो, कर्मे नाख्यो वस फंदे रे ॥प्रा०॥१५॥ ईश्वर देव पार्वती नारी, करता

पुरुष कहावे । अहनिस महिल मसाण में वासो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥प्रा०॥१६॥ सहस किरण सूरज प्रतापी, रात दिवस रहे अटतो । सोल कला शशिधर जग चावो, दिन दिन जाये घटतो रे ॥प्रा०॥१७॥ इम अनेक खंडया नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा । ऋद्धिहर्ष कर जोडी विनवे, नमो नमो कर्म महाराज रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥इति॥

[२३] प्रतिक्रमण की सज्झाय ।

कर प्रतिक्रमणो भावसुं, दोय घड़ी शुभ ध्यान लाल रे । परभव जातां जीवने, संबल साचो जाण लाल रे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिक राय प्रति बोध लाल रे । लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान लाल रे ॥ कर० ॥ २ ॥ लाख वर्ष लग तेहवे, इम दीये द्रव्य अपार लाल रे । एक सामायिकनी तोले, नावे तेह लगार लाल रे ॥ कर० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविसत्थो, देववंदन दोय वार लालरे । व्रत संभारोरे आपणां, ते भव कर्म निवार लालरे ॥कर० ॥४॥ काउस्सग्ग शुभ ध्यान थी, पच्चक्खाण सुधुं विचार लाल रे । दोय सज्झाये ते वली, टालो टालो अतिचार लाल रे ॥क०॥५॥ सामायिक प्रसाद थी, लहिये अमर विमान लाल रे । धर्मसिंह मुनि इम कहे, मुक्ति तणो एह निदान लाल रे ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

(२४) सप्त व्यसन की सज्झाय।

पर उपगारी साधु, सुगुरु इम उपदेशे। मीठी अमिय समान, सुणी मन उल्लसे॥ व्यसन बूरा ए सात, शाता इणसुं नहीं। धर्म अर्थ ने काम, विणासे ए सही॥ १॥ प्रथम व्यसन जूवा खेल, बीजो मांसशुं रुची। तीजो व्यसन सुरापान, चोथो वेश्या वसी। पंचम आखेटक जाण, छट्ठो चोरी तणो। परनारी शुं संग, व्यसन सातमो गिणो॥२॥ चोपट पासा सार, मोडी रमे जुवटों। सुख थाले मागे मार, बांधे कर्म चीकणा॥ नल हार्‍यो निज राज, नारी सुं निकल्यो। रह्यो पाण्डव वनवास, देशवटे दुःख भर्‍यो॥ ३॥ अभक्ष मास आहार, अशुचि पींड जीवडा। खानों बहुला दोष, कुजम बांधे खरा॥ राजा श्रेणिक आचू, नरकनो बांधियो। खिल खिल तो वारोवार, श्री वीरजिन थिर कियो॥ ४॥ राता माता मद्यपान, बहुजे प्राणिया। वेदना देश जान, नरक में ताणिया॥ रहे लडे पडे लाल, मोंखी मुख मालती। एह थी जादवनो नाश, जली द्वारा पुरी॥ ५॥ वेश्या धूत्तारी नारी, नहीं थिर नेहडो। जाणे गहली नारी, उपाड्यो वेहडो॥ राता इण रे संग, मुड्या जे बापडा। काड्यो कयवन्नो कूट, खाधी धननी जडी॥ ६॥ जलचर थलचर

जीव, हणे पशु पंखिया । ते भरे पापे पिंड, न देखे अंखिया ।। दशरथ ज्युं पापारंभ, रह्यो रुद्रध्यान में । जाय पड्यो ऊंडी खाड़, नरक नी गोदमाँ ।। ७ ।। चोरी जारी महापाप, तुरते जे आभडे । लागे दाप कलंक, काजल जिम कापडे ।। परधन ने परदार, ए सुख मधु विंदवो । गयो रावण नो राज, हुआ दुःख दंदुओ ।। ८ ।। व्यसन बुरा ए सात, जाणी ने परिहरौ । सुधो धर्म सुं ध्यान, खरौ तप जप करौ ।। जिम लहो स्वग ने मोक्ष, सदा सुख भोगवो । श्रीपुण्यकलश गुरु शिष्य, समयरंग मुनि इम भणे ।। ९ ।। इति ।।

---

(२५) आप स्वभाव की सज्झाय ।

आप स्वभावमें रे, अवधु सदा मगन में रहना । जगत जीव है कर्माधिना, अचरिज कछुअन लीना ।।आ० ।।१।। तूं नहीं केरा कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा । तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा ।।आ०।।२।। वपु विनाशी तूं अविनाशी, अब है इनका विलाशी । वपु संग जब दूर निकाशी, तब तूम शिव का वासी ।।आ०।।३।। राग ने रीसा दोय खविसा, ए तुम दुःखका दीसा ।

जब तुम उनको दूर करिसा, तब तूम जगका ईसा ॥आ०॥ ॥४॥ परकी आशा सदा निराशा, यह है जग जन फासा। ते काटन को करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा ॥आ०॥ ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी । कबहीक जग में कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गल की वाजी ॥आ०॥६॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी । कर्म कलंक को दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥आ०॥७॥ इति ॥

(२६) सहजानंदी की सज्झाय ।

सहजानंदी रे आतमा, सुतो कांई निश्चिंत रे । मोह तणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवंत रे ॥ लूंटे जगतना जंतरे, नांखी वांक अत्यंत रे, नरका वास ठवंत रे, कोई विरला उगरंत रे ॥स०॥१॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया कपट कराय रे । काश कुसुम परे जीवडो, फोगट जन्म गमाय रे ॥ माथे भय जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जायरे, कोण जग अमर कहवाय रे ॥स०॥ ॥२॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण

थागरे । दश माथा रण रडवड्यां, चांच दोये शिर कागरे ॥ देव गया नवि भागरे, न रह्यो माननो ञागरे, हरि हाथे हरि नागरे, जो जो भाईओना रागरे ॥ स० ॥ ३ ॥ केई चाल्या केई चालशे, केतां चालणहार रे । मार्ग वहतोरे नित्यप्रति, जोता लग्न हजार रे ॥ देश विदेश सधार रे, ते नर इण संसार रे, जाता यम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स०॥४॥ नारायण पुरी द्वारका, बलती मेली निराश रे । रोतां रणमा ते एकला, नाठा देव आकाश रे॥ किहां तरु छाया आवास रे, जल जल करी गयो सांसरे, बलभद्र सरोवर पास रे, सुणी पांडव शिववास रे ॥स०॥५॥ गाजी गाजी ने बोलतां, करतां हुकुम हेरान रे । पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे ॥ ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पिपल पानरे, म धरो झूठ गुमान रे ॥स०॥६॥ वालेश्वर विना एक घडी, नवि सहाय लगार रे। ते विना जनमारो वहि गयो, नहीं कागल समाचार रे ॥ नही कोई कोईनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवा साररे, पहोता मोक्ष मझार र ॥स०॥७॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे । नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विषय गमार रे ॥ जुवो सूरिकान्ता जे नाररे, विष देती भरतार

रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ।।स०।। ।।८।। हॅसी हॅसी देता तालिया, शय्या कुसुमनी साररे, ते नर अंते माटी थया, लोक चणे घरवार रे ।। घडता पात्र कुमार रे, एहवुं जाणी असार रे, छोड्यो विषय विकार रे, धन्य तहनो अवतार रे ।। स० ।।९।। थावच्चा सुत शिव वर्या, वली एलाचीकुमार रे । धिक् धिक् विषयारे जीवने, लई वैराग्य रसाल रे ।। मेली मोह जंजाल रे, घर रमे केवल वालरे, धन्य करकंडु भूपाल रे ।।स०।।१०।। श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म रयणा धरो छेकरे । वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे ।। न गमे ते नर भेकरे, धरता धर्मनो टेकरे, भवजल तरिया अनेक रे ।।स०।।११।। इति ।।

——:*:——

(२७) रात्रि भोजन की सज्झाय ।

पुण्य संयोगे नरभव लाधो, साधो आतम काज । विषयारस जाणो विष सरिखो, इम भांखे जिनराज रे ।। प्राणी रात्रि भोजन वारो ।।१।। आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सहे नाणीरे ।। रात्रि० ।। अभक्ष्य बावीस मां रयणी भोजन, दोष कह्यां प्रधान । तिण कारण रात्रि

मति जमजो, जो हुए हडडे सान रे ॥ प्रा० रा० ॥२॥ दान स्नान आयुध ने भोजन,, एटला राते न कीजे । ए करवां सूरजनी साखे, नीति वचन समजीजे रे ॥ प्रा० ॥३॥ उत्तम पशु पक्षी पण राते, टाले भोजन टाणो । तुमे तो मानवी नाम धरावो, किम सन्तोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥४॥ मांखी जुं कीडी कोलीआवडो, भोजनमां जो आवे । कोढ जलोदर वमन विकलतां, एवा रोग उपजावेरे ॥प्रा० ॥५॥ छिन्नु भव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं । एक तलाव फोडंता तेटलुं, दूषण सुगुरु वतायुं रे ॥ प्रा० ॥६॥ एकलोत्तर भव सरवर फोड्या सम, एक दव देतां पाप । अठलोत्तर भव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥७॥ एक सोने चुमालीस भव लगे, कुवणजना जे दोष । कुड एक कलंक दियंता, तेहवा पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥८॥ एक सोना एकावन भव लगे दीधां, कूडा कलंक अपार । एक वार शीयल खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥६॥ एक सोना नवाणुं भव लगे खंड्या, शीयल विषय संबंध । एके रात्रि भोजने तेहवो, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥१०॥ रात्रि भोजन मां दोष घणां छे, श्यो कहिये विस्तार । केवली कहता पार न पावे, पूर्व कोडी मझार रे ॥ प्रा० ॥११॥ राते नित्य चउवीहार

करीने, शुभ परिणाम धरीजे। मासे मासे पखखमणनो, लाभ इणी परे लीजेरे ॥ प्रा० ॥१२॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी। सुर नर सुख विलसी ते होवे, मोक्ष तणां अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥१३॥ इति ॥

(२८) योवनावस्था की सज्झाय।

जोवनीया की मोजां फोजाँ, जाय नगरॉ देती रे। घड़ी घड़ी घड़ियाला वाजे, तो ही न जागे तेहथी रे ॥जो० ॥१॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे। आवे अवधि उसके नहीं, लखपति ने लेतीरे ॥ जो० ॥२॥ माले बैठी मौज करे छे, खॉते जोवे खेती रे। जमरो भमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराज ने शरण जाओ, जोरालो को नही जेथी रे। दुनियामॉ दूजो दीसे नहीं, आखर तरसो तेथी रे ॥ जो० ॥४॥ दंत पड्याने डोसो थयो, काज सर्यु नहीं केथी रे। उदयरतन कहे आपे समजो, कहिये वातो केती रे ॥ जो० ॥५॥ इति ॥

(२६) धोबीडा की सज्झाय ।

धोवीडा तूं धोजे मननुं धोतीयुं रे । रखे राखतो मेल लिगार रे ॥ इणे मेलेरे जग मेलो कर्यो रे, विण धोयां न राखे लगार रे ॥धो०॥१॥ जिन शासन सरोवर सुहा-वणो रे, समकित तणी रूड़ी पालरे । दानादिक चार वारणा रे, मांहि नवतत्व कमल विशाल रे ॥धो०॥२॥ तिहां झीले मुनिवर हंसला रे, पीवे छे तप जप नीर रे। शम दम आदि जे शीयल, तीहां खाले आपणुं चीररे ॥धो०॥३॥ तपावजे तपतडके करोरे, जालवजे नव तत्व वाडरे । छांटा उडाडे पाप अढारनारे, एम उज्वलो होशे तत्काल रे ॥धो०॥४॥ आलोयण साबूडो सुधो कररे, रखे आवे माया शेवाल रे । निश्चय पवित्र पणुं राखजेरे, पछे आपणी नीमि संभाल रे ॥धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, चल मेलीने संकेलरे । समयसुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृतवेल रे ॥धो०॥६॥ इति ॥

—:o:—

३० उपदेश की सज्झाय ।

दमका नही भरोसा शोह, करले चलने का सामान ॥द०॥ तन पिंजर से निकस जायगा, छिन में पंछी प्राण

॥द०॥१॥ लख चौरासी योनि भटक्यो, उपनो गर्भाधान। सवा नव मास वस्यो अंध कूप में, मनुष्य रूप सनमान ॥ द० ॥ २ ॥ उत्तम कुल में जन्म लियो है, सुख में खान अरु पान। भीड पड्या तेरे कोइय न साथी, साथी दान अरु ध्यान ॥द०॥३॥ आशा तृष्णा विकथा निद्रा, कुमता रूप निधान। दिन २ वधे पाप की संगत, व्यापे क्रोध अरु मान ॥द०॥४॥ चलते फिरते सोवत जागत, करत खान अरु पान। छिन २ आयु घटत है तेरो, होत देह की हान ॥द०॥५॥ माल मूलक अरु सुख संपत में, होय रह्या गुलतान। देखत २ विनश जायगा, मत कर मान गुमान ॥द०॥६॥ झूठा यह सब जगत पसारा, नारी विष की खान। माया ममता आदि के वैरी, इनसे कहाँ पहिचान ॥द०॥७॥ पाँचों चोर मुंसे घर तेरा, इन से खोटी वाणी। आठ वैरी तेरे संग फिरत हैं, मोह बड़ा सुलतान ॥द०॥८॥ कोई रहने पावे नहीं जग में, यह तूं निश्चय जान। अजहुं छांड़ी समझ कुलटाई, मूरख नर अज्ञान ॥ द०॥९॥ भाई बंध अरु सजन संबंधी, राखे तेरा मान। अन्त समे कोई काम न आवे, किस पर मान गुमान ॥ द०॥१०॥ जप तप शीयल पालो शुभ संगत, दे सुपात्रे दान। सेवो साधु चरण चित्त ध्यावो, प्रभु भज तज अभिमान ॥द०॥११॥इति॥

(३१) पुनः उपदेश की सज्झाय ।

तूने संसारी सुख किम सांभरे रे लो, दुःख दिसयां गर्भावासना जो । नव मास रह्यो तूं माता उदरे रे लो, मलमूत्र अशुचि स्थानमां जो ॥तु०॥१॥ तिहां हवा पवन नहीं संचरे रे लो, नहीं सेज तलाई पलंग जो । निद्रा लटकी रह्यो ऊंधे शिरे रे लो, दुःख सहन अपार अनन्त जो ॥तु०॥२॥ अठ कोडी सुई तानी करी रे लो, समकाले चुभोवे कोई राय जो । तेथी अनन्त गुणो तिहां कर्ण रे लो, दुःख सहन विचार तत्र थाय जो ॥ तु० ॥ ३ ॥ हवे प्रमत्रे जो मुझे मायडी रे लो, तो हुं करुं तप जप ध्यान जो । हवे सेवुं सदा जिनराज ने रे लो, मूंक कुगुरुनो संगने अज्ञानजो ॥तु०॥४॥ ज्यारे जनमियो त्यारे तुं भूली गयो रे लो, ऊंहां ऊंहां रह्यो कहे इम जो । तिहां लागी लालच ममता तणी रे लो, आयु अंजली जल सम जाय जो ॥ तु०॥५॥ इम बालक वय रमता गई रे लो, थयो जोवन मकरध्वज साह जो, चित्त लाग्यो तदा रमणी सुखे रे लो, पुत्र पौत्र देखी हरखाय जो ॥तु०॥६॥ थई चिन्ता विवाह नेमनी रे लो, धन कारण धावे निश दिश जो । पुण्य हीन थको पामे नहीं रे लो, चिंते चोरी करु के लूटूं देश जो ॥तु०॥७॥ गयो जोवन आवी जरा डाकणी रे लो, धूजे

कर पग शरि ने शरीर जो । घर में कह्यो कोई माने नहीं रे लो, पड्यो करे पोकार नहीं धीर जो ॥तु०॥८॥ इम काल अनन्तो वही गयो रे लो, अब चेत मूर्ख शिरदार जो । जिनदास कहे जुग एहवो रे लो, मिलवो छे महा मुश्कील जो ॥तु०॥९॥इति॥

(३२) मार्गानुसारी ३५ गुण की सज्झाय ।

वीर कहे भविजन प्रत्ये, मार्ग तणो उपदेश हो सुन्दर । मार्ग ना अनुसरवा विना, किम लहे मार्ग प्रवेश हो सुन्दर ॥१॥ मार्गानुसारी गुण भजो, ते संख्या पांत्रीश हो सुन्दर । तेहथी गृही धर्म योग्यता, होय तेह कहीश हो सुन्दर ॥मा०॥ न्यायोपार्जित सम्पदा (१), शिष्टाचार नो चाह हो सुन्दर (२), अन्य गोत्रीयना कुल शीले, सरखां साथे विवाह हो सुन्दर (३) ॥मा०॥३॥ पाप कार्य थी वीह वुं (४), देशाचार सापेक्ष हो सुन्दर (५) । अपयश कोईना न बोलवुं, राजादिक नो विशेष हो सुन्दर (६) ॥मा०॥४॥ नहीं अति वावर सांकडे, ठाणा ये करे वो वास हो सुन्दर । पाडोशी होवे भला नहीं, बहु द्वार प्रकाश हो सुन्दर (७) ॥ मा० ॥ ५ ॥ संग सदा चारित्र

तणों (८)। मात पितानी सेव हो सुन्दर (९)। बहु उपद्रव उपने स्थानक, तजवां हेव हो सुन्दर (१०) ॥मा०॥६॥ नीच कर्म अपवर्त्तना (११), कर वो व्यय जोई आय हो सुन्दर (१२)। वित्त प्रमाणे वेसडो (१३), अड गुण बुद्धि प्रथाय हो (१४) सुन्दर ॥ मा० ॥ ७ ॥ सांभलवुं नित्य धर्म नुं (१५), अजीर्णे भोजन त्याग हो (१६) सुन्दर । भोजन करवूं सात्विकी (१७), भूख तणे बहु लाग हो सुन्दर ॥ मा० ॥ ८ ॥ धर्मार्थ कामने साधवो, मांहो मांहि अविरोध हो (१८) सुन्दर । साधु अतिथी दीननी, पडि अरणा जहाँ संधि हो (१९) सुन्दर ॥मा०॥९॥ परंपरा भव बुद्धि ये करी, कार्य तणो अनारंभ हो (२०) सुन्दर । विनयादिक गुण तणो, पक्षपाते नहीं दंभ हो (२१) सुन्दर ॥मा०॥१०॥ देशनी काल विरुद्धनी, आचरणा परिहार हो (२२) सुन्दर । कार्य आरंभ अवसरे, शक्ति अशक्ति विचार हो (२३) सुन्दर ॥मा०॥११॥ ज्ञानी गुण-वंतनी सेवना (२४), आश्रित पोष वो ध्यान हो (२५) सुन्दर । दीर्घ दृष्टि विचार वो (२६), न्यून विशेष नुं ज्ञान हो (२७) सुन्दर ॥मा०॥१२॥ कीधां गुण ने जाणवुं (२८), जन अनुकूल प्रवृत्ति हो (२९) सुन्दर । लज्जा (३०) दया ने (३१) सौम्यता (३२), पर उपकार नो वृत्ति

(३३) हो सुन्दर ॥मा०॥१३॥ अन्तर रिपु षट् वर्ग जे, काम क्रोध लोभ मान हो सुन्दर। मदने हर्ष जीतवा (३४), वश पंचेन्द्रिय तान हो (३५) सुन्दर ॥मा०॥१४॥ एह गुणे जे गृही पणो, पाले ते धन्य जीव हो सुन्दर। ते भव जुगल आराधतां, हुए आनन्दी सदीव हो सुन्दर ॥मा०॥ १५॥ प्रायः हुए तेहने विषे, धर्म बीजनो प्रसार हो सुन्दर। शुद्ध भूमिये बीज वाविया, धान्य जाति विस्तार हो सुन्दर ॥ मा० ॥ १६ ॥ इम जाणी गुण आदरो, आदि धार्मिक एह जाणी हो सुन्दर। पण्डित शान्तिविजय तणो, मान कहे शुभ वाणी हो सुन्दर ॥मा०॥१७॥इति॥
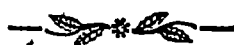
(३३) श्री मरुदेवी माता की सज्झाय।

माता मरुदेवी इम भणे, ऋषभजी आवोने घररे। हिवे मुझ घडपण छे खरो, मिलवा पुत्रनी आशरे ॥मा०॥ १॥ वच्छ तुम जाय वनमें वस्या, तुज विन सूनो छे राजरे। भरतादिक सौ पुत्र भला, पाले छ खंड राजरे ॥मा०॥२॥ ऋषभजी आवी समोसर्या, वनिता नयरी उद्यानरे। भरत जी दीनी वधावणी, हरखे उठी तिण वाररे ॥ मा० ॥३॥ आवी बैठी गज ऊपरे, साथे भरत सुजाणरे। संपदा देखी

निज पुत्रनी, पामी केवल ज्ञानरे ॥मा०॥४॥ धन माता धन पुत्रने, धन धन तेहनो परिवाररे । समय सुंदर इम विनवें, ते पाम्या भव पाररे ॥मा०॥५॥ इति॥

—— * ——

[३४] मधुविन्दु दृष्टान्त की सज्झाय ।

(ढाल)—सरस्वती सुभरे माता द्यो वरदान रे, पुछे गौतमरे भांखे श्री वर्द्धमान रे । छंडो गिरुआरे विरुआ विषय नुं ध्यानरे, विषया रसरे छे मधुविन्दु समानरे ॥

(त्रूटक)—मधुबिंदु सरिखो विषय निरखो जोई परखो चित्तसुं, नर जनम हार्यो मोह गार्यो पिण भरियो पापसुं । कंतार पडियो नाग नडियो कोई देवाणुप्पियो, वडवृक्ष जडियो वेगे चडियो रंक रहियो छप्पियो ॥१॥

(ढाल)—वड हेठलरे कूप अच्छे असराल रे, दोय अजगर रे मगर जिस्या विकराल रे । चिहुंपासे रे चार भुयगम कालरे, वली ऊपररे मोटो छे महुयाल रे ॥

(त्रूटक)—महुयाल माखी रक्त चाखी चंचु राखी ते रही, धंधोलतो गजराज धायो पडत वडवाई ग्रही ।

पडवाई कापे उदर आपे ताप सन्तापे ग्रह्यो, मधु थकी गलियां बिन्दु दलियो तेणे सुख लीणो रह्यो ॥ २ ॥

(ढाल)—एह संकट रे छोडण देव दयाल रे, दुःख हरवारे विद्याधर तत्काल रे। उद्धरवारे धरियुं तास विमान रे, आं आवेरे मधुबिन्दु करे सानरे ॥

(त्रूटक)—मधुबिन्दु चाखे वचन भाखे करे लालच लखवली, वार वार राखे सान पाखे रहो क्षण एक पर वली। तम खेचर मलियो वेगे वलियो रंक रुलियो ते नरु, मधुबिन्दु चाटे विषय साटे कह्यो उपनय जगगुरु ॥ ३ ॥

(ढाल)—चोराशी लखरे गति वासी कान्तार रे, मिथ्या मतिरे भूल्यो भमे संसार रे। जरा मरणा रे अवतरणा ए कूप रे, आठ खाणीरे पाणी पगड सरूप रे ॥

(त्रूटक)—आठ कर्म खाणी दोय जाणी तिरिय निरिय अंजरा, चारे कपाया मोह माया लंबकाया विषहरा। दोय पत्त उदर मरण गयवर आयु वडवाई वटा, चटका वियोगा रोग शोगा भोग योगा सामटा ॥ ४ ॥

(ढाल)—विद्याधर रे सतगुरू करे संभाल रे, तेणे धरिपुंरे धर्म विमान विशाल रे। विषया रस रे मीठो जेम मह्रुयाल रे, पडखावे रे बाल योवन वयकाल रे ॥

(त्रूटक)—रह्यो वाल यौवन काल तरुणी चित्त हरणी निरखतो, घर भार धुत्तो पंक खुत्तो मर्दा गुत्तो पोषतो। आनंद आणी जैन वाणी चित्त जाणी जागियं, चरण प्रमोद सुशिष्य जंपे अचल सुख इम मांगियं ॥५॥ इति॥

—※—

[३५] अनित्यादि वारह भावना की सज्झाय ।

॥ दोहा ॥

श्री शंखेश्वर पाय नमी, नमुं सद्गुरु सवार ।
वाग्देवी वंदन करी, भणुं भावना वार ॥ १ ॥
भावशून्य जग जीवडां, भवे भवाब्धि अजाण ।
भव भावटहर भावना, भावो भविक सुजान ॥२॥
प्रथम अनित्य[१] अशरण[२], पछी संसारस्वरूप[३] ।
एकत्वता[४] अन्यत्वता[५], अशुचि[६] आश्रवरूप[७] ॥३॥
संवर[८] निर्जर[९] भावना, लोकस्वरूप[१०] सुबोध ।
दुर्लभ[११] धर्म[१२] आराधवा, भावना अग्र अवरोध ॥४॥
वारे भावना भावता, मिटे मोह उन्माद ।
वैरागी होवे आतमा, प्रकटे अनुभव स्वाद ॥५॥
भाव रसायण भावना, करे लोहने हेम ।
पत्थर नव पल्लव करे, संत संग गुण जेम ॥६॥

ढाल १ली—अनित्य भावना ।

(झांझरिया मुनिवर धन्य २ तुम अवतार,–ए राग)

अनित्य भावना भाविये जी, अनित्य संसारनी छांय । ऊग्यो ते रवि आथमें जी, जनम्यो ते मरी जाय ॥ पुण्य वंता भाणो जिनवाणी धरा चित्त ॥ ए टेक ॥ १ ॥ जिस घर नोबत घडघडे जी, भूले मदभर नाग । तस मंदिर शून्ना पड्या जी, काला उडे छे काग ॥पु०॥२॥ डाभ अणीजल बिंदवो जी, विणसंता शी वार । चञ्चल चपला सम्पदा जी, चल संसार असार ॥पु०॥३॥ जल-तरंग सम आउखो जी, चञ्चल लक्ष्मी स्वभाव । घर घर मॉगी भीखडी जी, मुंझगये कर्म प्रभाव ॥ पु० ॥ ४ ॥ पांडव दास पणे रह्या जी, राम गया वनवास । सडन पडनें एह देहनांजी, शो करवो विश्वास ॥ पु० ॥५॥ देव प्रभावे जुंजियो जी, चक्री सनतकुमार । राहु ग्रह्यो रवि जोइने जी, बूज्यो कीर्त्तिधर राय ॥ पु० ॥ ६ ॥ चल धन चल वय संपदा जी अनित्य सयल संसार । अनित्य स्वजन मेलावडो जी, अनित्य भाव जीवधार ॥ पु० ॥ ७ ॥

(२६) दूसरी अशरण भावना की सज्झाय।

क्षण क्षण आवखा घटे, घटे दिवस ने रात।
आज तणां इमणा करो, काल तणी शी वात॥ १॥
ममता-मिंचाणां शिर फिरे, झडपे ताकी दाव।
धर्म विना शरणुं नहीं, भावना अशरण भाव॥ २॥

(ढाल २जी—भवि तुमे वंदोरे सुरीश्वर गच्छराया-ए राग)

तरुवर पंखी जेहवो मेलो, स्वजन सम्बन्धि मेलो। वेलाए विखराय जवानो, जिम वपोनो व्हेलो॥ भवि तुमे भावोरे, भावना अशरण भावो। धर्मशरण्यावोरे, अन्ते शरणे आवो॥ ए टेक ॥१॥ स्वार्थियो सहु कुटुम्ब कबीलो, मथपाखी सम जाणो, । गरज विन्या पछी जीर्ण वेलने, नीर न पाणी चारो॥ भवि० ॥ २॥ वित्त वहेंचे पण विपत्त न वहेंचे, अन्त समे सहु छोडे। दव बलतो देखी तरुपंखी, दश दिशामां जिम दोडे॥ भ०॥३॥ नित्य मित्र काया खाय पीने, वगडे नांखी देखो। पर्व मित्र सम स्वजन सम्बन्धी, चेयथी पाछा वहेशे॥ भ० ॥४॥ मात्रां मित्र जुहारधर्म ते, शरण रही दुःख कापे। कोई समे संभार्यो सज्जन, अन्ते शिव सुख आपे॥ भ० ॥५॥ राम गोविंद द्वारा मती वलती, मूकी चाल्या चरणे। चक्री सुभूम जलधिमां बूड्यो, देव न आया शरणे॥ भ०॥ ६॥

(३७) तीसरी संसार भावना की सज्झाय।

मोह जगत जंगल विषे, विरचे माया जाल।
तीतर झडपे बाज जिम, काल भेर शिर फाल ॥१॥
नाथ अनाथी मुनि थया, जोय संसार स्वरूप।
कर्म वशे सहु प्राणिया. कोण भिखारी भूप ॥२॥

(ढाल ३जी—नदी यमुना के तीर उडे दोय पंखिया-एदेशी)

आ संसार असार चक्रमां तुं भम्यो, छेदन भेदन ताड़न तर्जन जीव खम्यो। पुढवी अप तेउ वाउ बनस्पति त्रस थयो, नरक निगोदे सूक्ष्म बादरमां गयो ॥१॥ जल-चर भूचर खेचर भव कीधां घणां, देव मनुज कीधा राखी नहीं मणा। एम लाख चोरासी योनिये आथड्यो, चार गतिरूप चोके वेचाणो जीवडो॥२॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र जाति थयो, पुरुष नपुंसक स्त्री योनिमां तूं गयो। मात पिता प्रिय पुत्र भवान्तरे संभव्या, रे जीव एम अढारे नातरा अनुभव्या ॥ ३ ॥ जे संयोग वियोग ते पल पल जाणीयें, मात पिता रोवराव्या भवोभव प्राणीये। भव नाटकमां नाच्यो वेष नवीन करी, रूप कुरूप धनी निर्धनी सुभग दुर्भग धरी ॥ ४ ॥ एम संसार असारनुं नाटक भालिये, विषय कषाय प्रमाद ते वैरी टालिये। भुवनभानु-

जिन चरित्र सुणी ले विचारमां, कर्म वशे सुखदुःख ले, जीव संसारमां ॥५॥

—❀—

(३८ चौथी एकत्व भावना की सज्झाय ।

एम भव चक्र विषे भम्यो, कहेतां नावे पार ।
सुख दुःख साथी ना मिल्यो, कोई न आव्यो लार ॥१॥
ते कारण जीव एकलो, सुख दुःख ले संसार ।
एकाकी पणुं आदरे, तो पामे भव पार ॥२॥

(ढाल ४थी—कपूर होवे अति उजलो रे ए देशी)

आव्यो प्राणी एकलो रे, परभव एकलो जाय । पुण्य पाप साथे चले रे, स्वजन न साथी थायरे । प्राणी धर जिन धर्म सु रग, आपे सुख अभंग रे ॥प्रा०॥१॥ माल रहे घर स्त्री वोलेरे, पोले वलावी कन्थ । स्वजन वले श्मशानथी रे, जीव चले परपंथ रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ स्वार्थियो मेलावडो रे, स्वजन कुटुम्ब समुदाय । सुख दुःख सहे जीव एकलोरे । कुलमां नहीं वहेंचाय रे ॥ प्रा० ॥३॥ प्राणभोग लख आपीनेरे, वसुमती करी निज हाथ । चक्री हरि गया एकलारे, पृथ्वी न गई तस साथरे ॥ प्रा० ॥४॥ लखपति

छत्रपति सहु गया ऋद्धि न गई तम साथ । हांक सुणीरे, जन थर थरे रे, ते गया ढाले हाथ रे ॥मा०॥५॥ अभिमानी रावण गयोरे, जग जश लई गयो राम । आखिर जावुं एकलोरे, अवसर पहुंचे जायरे ॥मा०॥६॥ एकाकी पणां आयुं र, मूक्यो मिथिलानो राज, वलय दृष्टान्ते बूझियोरे, त्यागी थयो नमिरायरे ॥मा०॥७॥

— .※ —

(३) पांचवीं अनित्यभावना की सज्झाय ।

एकाकी तूं जीवडो, तारूं अन्य न कोय ।
अन्यत्व-भावना भावियें, स्वपर वहेंचणी होय ॥१॥
जूदो ताहरो आतमा, जूदो स्वजन तमाम ।
धर्म कर्म परिवारनुं, आवे नहिं तुझ काम ॥२॥

(ढाल ५ मी—अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी,–ए राग)

पांचमी भावना भवियण भावियें, जीव अनित्य अनादि रे । तूं नहीं कोईनोरे ताहरो कोई नहीं, जाग न थइश प्रमादी रे ॥पां०॥१॥ कुटुम्ब कबीलो रे सहु स्वारथे मल्यो, गरजे दाखे प्रीति रे । अंत समे वाहला रहे वेगला:

ए संसार नी रीतो रे ॥पां०॥२॥ पंखी मेलो रे प्रहतरु पर मले. सांझ समे जाय भागी रे। तिम ए मेलो रे जाणो कारमो, पुत्र जाय पितु त्यागी रे ॥पां०॥३॥ जेम पंथिडरे पंथ विषे मल्या, कुणसू कीजे प्रीतोरे। रात्रिवासो रे प्रह ऊठी चल्या, प्रीत नी रीत अनित्य रे ॥ पां० ॥४॥ तीर्थ मेलोरे जिम तीर्थे मल्यो, वणज काज वेपारी रे। भाग्य प्रमाणे रे टोटो फायदो, लई निज घर जाय लहारो रे ॥ पां० ॥५॥ स्नेह सगाई रे जहाँ मतलब लगे, गरज वीते होय वैरी रे। गरज मिटे निज पति नारी हण्यो, कर्म सु-रिकान्ता वेरी रे ॥ पां० ॥६॥ निज सुत हणवारे चूलणीए कर्यु, लाक्षादिक कूट गेह रे। कुल क्षय कीधो रे कौरव पांडवे, जो जो भाइयोना स्नेह रे ॥ पा० ॥७॥ लोह पिंजरे रे श्रेणिक पूरियो, वहेंच्या पृथ्वीना भाग रे। कोणिक राजा रे पितु द्रोही थयो. एहवा सुतना राग रे ॥ पां० ॥८॥ कोण सुत कोण माता एह भावथी, लहे केवल मारुदेवा रे। कोण वीर कोण गोयम एह भावथी, गौतम ज्ञान स्व-यमेव रे ॥ पां० ॥ ९ ॥

—※—

[४०] छट्ठी अशुचि भावना की सज्झाय।

लसणसंग मृगमद तणो, सुगंध चणमां जाय।
गंदी काया संग थी, सरस विरस रस थाय ॥ १ ॥

ए अशुचि काया तणो, श्यो करवो विश्वास।
तजे प्राण जंगल विषे, काया कुटिल निवास ॥ २ ॥

(ढाल छट्ठी—कर्म न छूटे रे प्राणिया, ए राग)

काया माया छे कारमी, अशुचि गंदी निर्माल्य। नगर खाल परे नित वहे, मल मूत्रनी परनाल ॥काया०॥१॥ काचनो कूपो भांग्या पछी, कटको नहीं आवे काम। तेम दुर्गन्धी काया बनी, रोम रोम रोग धाम ॥का०॥२॥ नर नव द्वादश नारीना, द्वार वहे दिन रात। मांस रुधिर अस्थि मज्जा त्वचा, मेद वीरज साते धात ॥का०॥३॥ देखी दुर्गन्ध दूर थी, मुख मचकोडे अज्ञान। तुज तनु लहवी अशुचि भरी, छोड़न लावीश नादान ॥का०॥४॥ नरक नी वारी नारी खरी, क्यारी अशुचि भंडार। राज-धानी मोहरायनी, कृमि कोथली निरधार ॥का०॥५॥ द्वार अपाने मल नित वहे, रुधिर वहे अप द्वार। मोह मुजाणा जग जीवडा, सुख माने त्यों संसार ॥का०॥६॥ चर्म जड़ी पेटी मोहनी, जीव रह्यो गर्भावास। कृमि परे

मलमूत्रमां वस्यो, ऊंधे मस्तक नव मास ॥का०॥७॥ रक्त वन्यो जन्म स्थानमां, पान स्थानमाँ मुंजाय । काल अनादि थी जीवडो, विरम्यो नहीं विषय कषाय ॥का०॥८॥ निज पर रूप थी नथि राचिये, ते विणसंता शी वार । कंचन सम काया क्षण पछी, विणसी सनतकुमार ॥का०॥९॥ भोजन भरी कंचन पूतली, द्वारे ऊछली दुर्गन्ध । मल्लि मित्र वुज्या तेहथी, निरख्यो अशुचि प्रबंध ॥का०॥१०॥इति॥

—— ० ——

[४१] सातमी आश्रव भावना की सज्झाय ।

हिंसा विषय कषाय रूप, निर्झरणा थी भराय ।
बेतालीस गडनाल थी, आश्रव सर छलकाय ॥ १ ॥
पाप पंकमा प्राणियो, मोह मुंजियो लपटाय ।
प्रकटे संवर भानु जो, आश्रव सर शोषाय ॥ २ ॥

(ढाल ७मी—श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निग्रन्थ, ए राग)

सातमी भावना भाविए, आश्रव पापनुं स्थान । पचाश्रव तजो प्राणिया, हिंसानुं फल नरक निदान रे ॥ चेतन राय, परिहरो विषय कषाय । आश्रव सेव्या अधो-गति जाय रे ॥ १ ॥ दशमे अंगे दारुण्या, जेहना दुष्ट

प्रपंच । होंसे जे हिंसा करे, ते लहे दुःख दोहग भव संचरे ॥ चे० ॥ २ ॥ पिष्ट कुकड़ो विदारियो, निज माताना आज्ञाए। यशोधर कर्मे नचावियो, चारित्र सुणी तस थरहरे कायरे ॥ चे० ॥ ३ ॥ अलिक वयणे वसु भव भम्यो, मंडिक लई पर ग्रास । सत्यकी मुओ अब्रह्मथी, परिग्रहे ब्रह्मदत्त नरक निवासरे ॥ चे० ॥ ४ ॥ सुख वांछक सो प्राणिया, दुःख वांछक नवि कोय। निर्दोषी पशु पंखिया, हणतां कडुक विपाक फल होयरे ॥ चे० ॥ ५ ॥ रूपे राचि पतंगीयारे, दीपकमां बली जाय । रसना इंद्रिय ने लालचेरे, धीवर जालमां मीन फसायरे ॥ चे० ॥ ६ ॥ गन्धे अलि केदी वने, शब्दे मृगजीव जाय । फरसना इन्द्रियना विषयथी, गजवर आलान स्थंभे बंधायरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ एक एक इन्द्रियवश पड्या, प्राणी लहे दुःख भूर । पंचेन्द्रिय वश प्राणिया, भव भव भटकी लहे दुःख पुररे ॥ चे० ॥ ८ ॥ कांणी नाव जल भरी, बूडी जलधि मझार । हिंसादिक पापे बूडे, आतम जहाज ते भवोदधि मायरे ॥ चे० ॥ ९ ॥ एम जाणी आश्रव तजो, निंदा विकथा चार। अव्रत पांच तजो प्राणीया, संवर थई उतरे भव पाररे ॥ चे० ॥ १० ॥

(४१) आठमी संवर भावना की सज्झाय।

ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं, मनन करे दिनरात।
परगुण ग्राही भवि जना, पर दोषे अज्ञान ॥१॥
कषाय वह्नि समाविये, उपशम मेघ प्रभाव।
निज पर समय विचारिये, तो होय संवर भाव ॥२॥

(ढाल ८मी—वणजारानी देशी)

संवर-भावना भाविए मन भमरारे, आश्रवनो करी रोध मन भमरारे। आर्त्त रौद्रने परिहरो म०, धर्म शुक्ल करी सोध म० ॥१॥ क्रोध क्षमाथी जीतीये म०, मार्दवथी अभिमान म०। माया सरल पणे हणो म०, संतोष थी लोभ सेतान म० ॥ २ ॥ समिति गुप्तिथी गोपवो म०, विषय कषाय प्रमाद म०। पंचेंद्रिय दमो प्राणिया म०, ध्यान धरो स्याद्वाद म० ॥ ३ ॥ विषय विरसथी वारिये म०, मन मातंग मस्तान म०। शान्त सुधारस पीजिये म०, लीजिये अनुभव ज्ञान म० ॥ ४ ॥ जीवित मरणो समगिणे म०, लाभ खोट संतोष म०। मान अपमाने सुख दुःखे म०, हर्ष शोक नहीं रोष म० ॥ ५ ॥ शत्रु मित्रने सम गणी म०, चिंते थई अणगार म०। श्रावक मन इम चिंतवे म०, संथारो करूं सार म० ॥ ६ ॥ साधु चिंतवना करे म०, आगम भणुं शुभ ज्ञान म०। प्रतिमा रूप संले-

खणा म०, क्यारे करीश धरी ध्यान म० ॥ ७ ॥ सत्य वचन भाखे सदा म०, पर धन गणे पाषाण म० । मदन फोज हणवा धरे म०, शियल सुवक्तर बाण म० ॥ ८ ॥ परिग्रह आरंभ नवि करे म०, परिषह सहे बावीस म० । देव मनुष्य उपसर्ग थी म०, निश्चल रहे अहनीश म० ॥ ९ ॥

(४२) नवमी निर्जरा भावना की सज्झाय ।

(महावीर ने करूं वंदना हुं वारीवाल, ए राग)

आदर भावना निर्जरारे लाल, प्रकटे आत्म स्वभाव सुख कारीरे । कर्म इंधन परजालवारे लाल, तपवह्नि प्रकटाय हितकारीरे ॥ आ० ॥ १ ॥ अभ्यन्तर षट् भेद छेरे लाल, बाह्य भेद षट धार सु० । क्षमा सहित तप आदरोरे लाल, तो उतरे भव पार हितकारीरे ॥ आ० ॥ २ ॥ खाधुं गिरिवर जेटलुंरे लाल, पीधुं सागरनीर सु० । तृप्ति न पाम्यो जीवडोरे लाल, तर्यो न भवजल नीर सु० ॥ आ० ॥ ३ ॥ पर्वत जेवा पातकोरे लाल, तपवज्र भेदाय सु० । दृढ़प्रहारी तप आदरीरे लाल, तद्भवे मोक्षे जाय सु० ॥ आ० ॥ ४ ॥ बाह्य शत्रु तपथी टलेरे लाल, अंतरगत रागद्वेष सु० । ऋद्धि सिद्धि प्रकटे खरीरे लाल, आत्म ऋद्धि समाधि सु० ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ व्रत पच्चक्खाण करे सदारे लाल, वैयावच्च गुरुभक्ति

सु० । योग वहन उपधानथीरे लाल, फोग्वे आत्मशक्ति सु० ॥ आ० ॥ ६ ॥ चैत्यभक्ति आवश्यक करेरे लाल, सामायिक पोपध सु० । कर्म सूडन कनकावलीरे लाल, वर्द्ध-मान तप शुद्धि सु० ॥ आ० ॥ ७ ॥ पडिमा द्वादश निर्वहेरे लाल, तपथी निर्जरा थाय सु० । कनककेतु खन्धक परेरे लाल, धन्नो नन्दनऋषिराय सु० ॥ आ० ॥ ८ ॥ नाग-केतु सम तप करेरे लाल, हाले कर्मनो मेल सु० । जन्म मरण फेरा टलेरे लाल, निर्जरा होय रंगरोल सु० ॥ आ० ॥ ९ ॥

---

(४३) दशमी लोक स्वरूप भावना की सज्झाय ।

लोक स्वरूपने भावतां, लोकालोक प्रकाश ।
वस्तुगते वस्तु तणो, हृदय थाय आभास ॥१॥
कर्म इंधन ध्यानानले, भस्म थाय क्षण मांय ।
लोक स्वरूप ध्याता थका, जन्म मरण दुःख जाय ॥२॥

(ढाल १०मी—आवो २ यशोदाना कंथ अम घर आवोरे । ए राग)

तमे लोक स्वरूप भवि भावना दशमी जाणोरे, जेथी जीवाजीव पुण्यपापादि तत्त्व पिछाणोरे । चौद राजलोक चौद रज्जु प्रमाण विस्तारोरे, कटि पर कर देई नेई उभो

पुरुष आकारेरे ॥ तमे० ॥ १ ॥ जेनो आदि अंत नहीं जन्म मरण नहीं जेनोरे, पंच द्रव्य सहित शाश्वत पुद्गल छे एनोरे । जग जंतु अनन्ता स्थान, नहीं जस उपमारे, जीव भजवो भवनाटक ए रंग मंडपमांरे ॥ तमे० ॥ २ ॥ वली द्वीप समुद्र असंख्य थकी ए वींटेलोरे, जेम विध विध रंग तरंग अभंग वशेलोरे । क्यांक हर्ष वधामणा थाय शोक कंई होवेरे, क्यांक अंधकारने उद्योत क्यांक जीव रोवेरे ॥ तमे० ॥ ३ ॥ दधिमंथन दंड परे पग ते अधो जाणोरे, तस ऊपर तीर्छा ऊर्ध्व ते ऊपर मानोरे । अधोलोक छत्रासन ऊर्ध्व मृदंग आकारोरे, तीर्छा झलरी सम आकार सिद्धान्त स्वीकारोरे ॥ तमे० ॥ ४ ॥ सात राज अधो रज्जु सात प्रमाणे जाणोरे, ज्यां रत्नप्रभादिक सात भुवि मन मानोरे । सात राज देशऊण ऊर्ध्व तिर्यग्मन आणोरे, लोकान्ते मस्तक सिद्धशिला आदर्योरे ॥ तमे० ॥ ५ ॥ जे पीस्तालीश लख जोजन सम विस्तारोरे, तेथी ऊंचा सिद्ध सदैव ज्योतिमय धारोरे । जे अजर अमर अविनाशी अने अकलंकीरे, चिदानंद लोकालोक भाव लहे निःसंगीरे ॥ तमे० ॥ ६ ॥

---

(४४) अग्यारमी बोधि दुर्लभ भावना की सज्झाय।

वार अनन्ते फरसीयो, छाली वाटक न्याय ।
ज्ञान विना नवि संभरे, लोक भ्रमण भउवाय ॥१॥
रत्नत्रय तीन भवन में, दुल्लह जाणी दयाल ।
बोधिरयण काजे चतुर, आगम खाण संभाल ॥२॥

(ढाल ११मी—खंभाती राग)

दश दृष्टान्ते दोहिलोरे, लाधो मणुअ जमारोरे। दुल्लहो उंबर फुलज्युं, आरज घर अवतारोरे ॥ मोरा जीवनेरे, बोधिभावना अग्यारमी, भावो हृदय मजारोरे ॥ मो० ॥१॥ उत्तम कुल तिहां दोहिलोरे, सद्गुरु धर्म संयोगोरे । पांचे इन्द्रिय परगडोरे, दुल्लहो देह निरोगोरे ॥ मो० ॥२॥ सांभलवुं सिद्धान्तनुंरे, दोहिलो तस चित्त धाररे । सुधी सद्हणा धरोरे, दुक्कर अंगे करवुंरे ॥ मो० ॥ सामग्री मवली लहीरे, मूढ मुधा मम हारोरे। चिन्तामणि देवे दियुंरे, हार्यो जेम गमारोरे ॥ मो० ॥ ४ ॥ लोह कीलकने कारणेरे, कुण यान जलधिमां फोडेरे । गुण कारण कुण नवलखोरे । हार हीयानो तोडेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥ बोधिरयण उवेखीनेरे, कोण विषयार्थे दोडेरे । कांकर मणि समोवड करेरे, गज वेंचे खर होडेरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गीत सुणी नटणी कनेरे, क्षुल्लके चित्त विचार्योरे । कुमारादिक पण समझियारे, बोधिरयण संभार्युरे ॥ मो० ॥ ७ ॥

(४५) बारमी धर्म भावना की सज्झाय ।

परिहर हरिहर देव सवि, सेव सदा अरिहंत ।
दोप रहित गुरु गणधरा, सुविहित साधु महंत ॥१॥
कुमति कदाग्रह मूक तुं, श्रुत चारित्र विचार ।
भव जल तारण पोत सम, धर्म हियामां धार ॥२॥

(ढाल १२मी—डुंगरीयानी देशी)

धन्य धन्य धर्म जगहित करूं, भांख्यो भलो जिनदेवरे । इह पर भव सुखदाय को, जीवडां जन्म लगी सेवरे ॥ १ ॥ भावना सरस सुरवेलडी, रोप तू हृदय-आरामरे । सुकृत तरु लहिये वहु पसरती, सफल फलसे अभिरामरे ॥ भा० ॥२॥ क्षेत्र शुद्धि करीय करुणारसे, काढी मिथ्यादिकगालरे । गुप्ति त्रिहुं गुप्ति रुडी करे, नीक तूं समकित वालरे ॥ भा० ॥३॥ सींच जे सुगुरुवचनामृते, कुमति कंथरे तजी संगरे । क्रोध-मानादिक सूकरा, वानरो वारि अनंगरे ॥ भा० ॥ ४ ॥ सेवंता एहने केवली, पन्नरसय तीन अणगाररे । गौतम शिष्य शिवपुर गया, भावतां देवगुरु साररे ॥ भा० ॥ ५ ॥ शुक परिव्राजक सीधलो, अर्जुनमाली शिववासरे । राय-प्रदेशी जे पापियो, कापियो तास दुःख वासरे ॥ भा० ॥६॥ दुःसमय दुपसह लगे, अविहल शासन एहरे । भावसु भवि-यण जे भजे, तेह शुभमति गुणगेहरे ॥ भा० ॥ ७ ॥

❀ इति बारह भावना की सज्झाय समाप्त ❀

(४६) पंचम आराकी सज्झाय।

वीर कहे गोतम सुणो, पंचम आराना भावरे। दुखिया प्राणी अतिघणा, सांभल गोतम स्वामीरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेर होशे ते गांमडा, गांमडा होशे श्मशानरे। विन गोवालेरे धन चरे, ज्ञानी नहीं निर्वाणरे ॥ वी० ॥ २ ॥ मुझ केडे कुमति घणां, होशे ते निर्धाररे। जिनमतनी रूचि नहीं, थापशे निज मतिसाररे ॥ वी० ॥ ३ ॥ कुमति घणा कदाग्रही, थापशे आपणा बोलरे। शास्त्रमार्ग सवि मूकशे, करशे जिनमत मोलरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पाखंडी घणा जागशे, भांगशे धर्मना पंथरे। आगममत मरडी करी, करशे नवा वली ग्रंथरे ॥वी०॥५॥ चालणीनी परे चालशे, धर्म न जाणे लेशरे। आगम शास्त्रने टालशे, पालशे निज उपदेशरे॥वी०॥ ॥६॥ चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोलरे। साधु जन सीदायशे, दुर्जन बहुला मोलरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ राजा प्रजाने पीडशे, हिंडशे निर्धन लोकरे। मांग्या न वर्षशे मेहला, मिथ्या होशे बहुथोकरे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत् उगणीसे चोहुत्तरे, होशे कलंकी रायरे। मात ब्रह्माणी जाणीये, बाप चण्डाल कहेवायरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ छ्यासी वर्षनो आउखो, पाटलीपुरमां होशेरे। तसु सुत दत्तनामे भलो, श्रावक कुल शुभ पोपरे ॥ वी० ॥ १० ॥ कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोयरे। चोथ लेशे भीक्षा तणी, महा आकरा कर

होयरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ इन्द्र अवधिये जोवतां, देखशे एह स्वरूपरे । द्विजरूपे आवी करी, हणशे कलंकी भूपरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इन्द्र सुरलोके जायरे । दत्त धर्म पाले सदा, मेटशे शत्रुंजयगिरिराजरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी जिन मंडित करी, पामशे सुख अपाररे । देवलोके सुख भोगवे, नामे जय २ काररे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पांचमां आराने छेहडे, चतुर्विध श्रीसंघ होशेरे । छठो आरो वेसतां, जिनधर्म पहेलो जाशेरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ वीजे अग्नि विणशसे, त्रीजे राय न कोयरे । चोथे प्रहर लोपना, छठे आरेते होयरे ॥ वी० ॥ १६ ॥

दूहा—छठे आरे मानवी, बिलवासी सवि होय ।
वीस वर्षनो आउखो, षट वर्षे गर्भज होय ॥१७॥
सहस चोरासी वर्ष पणे, भोगवशे भवि कर्म ।
तीर्थंकर होशे भलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥१८॥
तस गणधर अतिसुंदर, कुमारपाल भूपाल ।
आगमवाणी जोयने, रचिया रयण रसाल ॥१९॥
पञ्चम आराना भावए, आगमे भांख्यो वीर ।
ग्रन्थ वोल विचार कह्या, सांभल जो भवि धीर ॥२०॥
भणतां समकित संपजे, सुणतां मंगल माल ।
जिनहर्ष कही जोडए, भांख्या वयणरसाल ॥२१॥

(४७) एकादशी की सज्झाय।

आज मारे एकादशीरे, नणदल मौन करी मुख रहिये। पूछ्यानो प्रत्युत्तर पाछो, केहने कांई नहिं कहिये ॥ आज० ॥ १ ॥ मारो नणदोई तुझने व्हालो, मुझने ताहरो वीरो। धूंआडामां बाथज भरतां, हाथ न आयो हीरो ॥ आज० ॥ ॥ २ ॥ घरनो धन्धो घणोइज करियो, एक न आयो आडो। परभव जातां पालव झाले, ते मुझने देखाडो ॥ आज० ॥ ॥ ३ ॥ मागशिर शुद इगियारस मोटी, नेवुं जिनने निरखो। दोढसौ कल्याणक मोटा, पोथी जोईने हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रतसेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन करी मुख रहियो। पावापुर सगलो प्रजलीयो, तेहनो कांई नहिं दहियो ॥ आ० ॥ ५ ॥ आठ पहोरनो पोसह करियो, ध्यान प्रभु-जीनो धरियो। मन वच काया जो वश करिये, तो भव सायर तरिये ॥ आ० ॥ ६ ॥ ईर्यासमिति भाषा न बोले, आडुं अवलुं पेखे। पडिक्कमणासुं प्रेम न राखे, कहो किम लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माला फेरे, जीव फिरे मन मांहि। चितडुं तो चिहुं दिशि डोले, इण भजने सुख नांहिं ॥ आ० ॥ ८ ॥ पौषधशाले भेगा थईने चार कथा वली सांधे। कोईक पाप मिटावण आवे, आठ गुणो वली बांधे ॥ आ० ॥ ९ ॥ एक उठंति आलस मोडे, बीजी ऊंघे बैठी। नदियोमांथी कांईक नीसरती, जई दरिया में

पेठी ॥ आ० ॥ १० ॥ जानियाने जिमण वाल्हो, वरने वाल्ही कन्या । लुगाईयोने वातो वाल्ही, ज्यूं मतवालो सिरो ॥ आ० ॥ ११ ॥ आई वाई नणंद भोजाई, नानी मोटी बहूने । सासु सुसरो माने माशी, शिखामण छे सहुने ॥ आ० ॥ १२ ॥ उदय रतन वाचक उपदेशे, जे नरनारी भणशे । पोसह मांहि प्रेम करीने, अविचल लीला लेशे ॥ आ० ॥ १३ ॥

---

(४८) स्वार्थ की सज्झाय ।

स्वारथकी सब हैरे सगाई, कुण माता कुण बेनड भाई । स्वारथे भोजन भक्त मगाई । स्वारथ विन कोई पाणी न पाई ॥ स्वा० ॥ १ ॥ स्वारथे मा वाप सेठ बडाई, स्वारथ विन नित होत लडाई ॥स्वा०॥ ॥ २ ॥ स्वारथे नारी दासी कहावे, स्वारथ विना लाठी ले धाई ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथे चेला गुरु गुरुभाई । स्वार्थ विना नहीं होत सहाई ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ समय सुंदर कहे सुणोरे लोका, स्वारथ है भली परम मगाई ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

---

(४६) शीयलव्रत की सज्झाय ।

श्रीजिनवाणी हो भवियण चित्त धरो, छंडो विषय विकार चतुर नर । नारी निरखी हो नयण न जोडिये, नवि पडिये भवकूप चतुरनर ॥ श्री जिनवाणी हो भवियण चित्त धरो ॥ १ ॥ सज्जन स्नेही हो शीयलथी सुख लहे, आत्म निर्मल थाय च० । व्रत सकल मांहि जेह शिरोमणि, जस गुण सुर नर गाय च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ चक्षु कुशीले हो जे सुख मानतां, विणसाड्या निज काज च० । काचने कटके हो रत्न चिन्तामणी, हारे निज कुल लाज च० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ रूपने जोवे हो राग वधे सहि, विषय वधे मन काय च० । मनने पापे हो मच्छ तंदुलीयो, जुवो मरी सातमी जाय च० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ धिक् २ सरसव सुखने कारणे, दुःख लहे मेरु समान च० । अणभोगवतां भवसायर रूले, करतां युवतीनो ध्यान च० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ राजा रूपी हो नयन कुशील थी, लक्ष्मण मननेरे पाप च० । काया ने योगे हो सत्य की प्रमुख बहु, पाम्या भवदधि ताप च० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संजम पालियो वर्ष सहस लगे, राजा ऋषि कुंडरिक च० । उत्तराध्ययने हो भोगने चाखतो, पाम्यो नर्कनी भीक च० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सामग्री जोगे हो जे नवि साधतां, ते लेशे भवनीरे वाट च० । भांग्यो घाट ते हो मलवो दोहिलो, कामनो मुखडोरे दाट च० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ देह अशुची हो

मलमूत्रे भरी, नर्कनी दीवी हो नार च० । इम जाणी हो नवविध पालजो, पामशो भवनोरे पार च० ॥ श्री० ॥९॥ दीपक पकडी हो जे कूणे पडे, हर्षे जे विप खाय च० । अग्नि मूके हो निज आवासमां, तस कुण वारवा जाय च० ॥ श्री० ॥ १० ॥ शीयल पालनथी हो उत्तम पद लहे, रूप कला गुणखाण च० । कीर्त्ति वाधे हो इहभव परभवे, जीव लहे बहुमान च० ॥ श्री० ॥ ११ ॥

---

(५०) मन की सज्झाय ।

क्या करूं मन स्थिर नहीं रहतां, अधर फिरे मन मेरारे । इस मन को बेर बेर समझाया, समझ २ मन मेरारे ॥ क्या० ॥ १ ॥ बैठ कहू तो मन उठ चलत है, मन दोग मन धीरारे । पाव पलक मन स्थिर नहीं रहतां, कौन पतियारा मन तेरारे ॥ क्या० ॥ २ ॥ कूड कपट महा विपयका भरिया, परनारी संग हेरारे । भव भवमें जीव हाल भटकतां, फोगट फेरा फिरियारे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ कुटुम्ब कबीला माल खजाना, इहमें नहीं कोई तेरारे । सांज भई जब उठ चलेगा, जंगल होगा डेरारे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ कहत आनन्दघन मन समजावो, मन कायर मन शूरारे । मनका खेल अजरका प्याला, पीवे कोई पीवणहारारे ॥ क्या० ॥५॥

---

(५१) वैराग्य की सज्झाय ।

परदेशीया में कोण चलेगो तेरी लार । चलेगी मेरी माता, चलेगी मेरी नार । नहीं २ हो चेतन, जावेगी देहली तक लार ॥ पर० ॥ ॥ १ ॥ चलेगी मेरी माता की जाई मेरी लार, नहीं २ हो चेतन झूठा है सारा परिवार ॥ पर० ॥ २ ॥ चलेगा मेरा भाई चलेगा मेरा यार, नहीं २ हो चेतन, फूकेंगे तोय अग्नि मजार ॥ पर० ॥ ३ ॥ चलेगा मेरा बेटा चलेगा परिवार, नहीं २ हो चेतन मुतलब का है संसार ॥ पर० ॥ ४ ॥ चलेगा मेरा माल खजाना परिवार, नहीं २ हो चेतन पडा रहेगा घरबार ॥ पर० ॥ ५ ॥ चलेगा मेरी फोजा चलेगा दरबार, नहीं २ हो चेतन जीते जीका है सरकार ॥ पर० ॥ ६ ॥ चलेगी मेरी काया चलेगा मन-सार, नहीं २ हो चेतन छोडेंगे तोये मझधार ॥ पर० ॥ ७ ॥

---

(५२) सुगुरु की सज्झाय ।

नमुं नमुं मैं गुरु निग्रन्थको, वे जिनमुद्रा धारी है । पुद्गल उपर प्रेम न करतां, मनकी ममता मारी है ॥ नमुं० ॥ १ ॥ गर्व गाल कर गुप्ति गोपवे, गति निग्रन्थकी न्यारी है । कनक कामिनी के नहीं भोगी, वे पूरे ब्रह्मचारी है

॥ नमुं० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी, उनके वे हित-कारी है । कर्मकाट कर केवल पावे, ज्ञान गरथ गुण भारी है ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासे सुमति सेवे, निज आतम को तारी है । जिनवर को जिनदास विनवे, उनके चरण बलीहारी है ॥ नमुं० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

(५३) कुगुरु की सज्झाय ।

तजुं तजुं मैं उन कुगुरु को, कनक कामिनी धारी है । ज्ञान ध्यान की बात न जाणे, अष्टकर्म से भारी है॥तजुं०॥१ करी कपाले भभूत लपेटी, शीर पर जटा वधारी है । कान फाडकर मुद्रा पहेरतां, उसके घर में नारी है ॥ तजुं ॥ २ ॥ जोग लेई करी जीव विनाशे, वे मद्यमांस आहारी है । कूडा पंथ कहतां जगत को, मुखसे कहे आचारी है ॥ तजुं० ॥३॥ अवगुण कुगुरु का कहुं कठा लग, साधु नहीं संसारी है । आप डूबे अवरन कुं डूबोवे, दुर्गतिका अधिकारी है ॥ तजुं० ॥ ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्म की, नहीं, कुगुरु को प्यारी है । जिनवर को जिनदास विनवे, कुगुरु संग खुवारी है ॥ तजुं० ॥ ५ ॥

---

(५४) छींक शकुन की सज्झाय ।

छींक शकुननो कहुं विचार, समुद्र समीप सुण्यो मैं सार । आगलमां जो छींकज होय, अशुभ तणी जाणे जो कोय ॥ १ ॥ पहेलां शकुन हुवां शुभ घणा, छींक हुवा निष्फल ते तणा । छींकज हुवा पछी जो जाण, शकुन हुवा ते करो प्रमाण ॥ २ ॥ डावी छींक होग अर्द्ध फल कहे, जमणी छींक बूरी सब कहे । पूंठे छींक सुखदायक सही, घणी छींक ते निष्फल कही ॥ ३ ॥ हांसे भये उपाधिये करी, हठ घणो मन मांहि धरी। एक छींक ते निष्फल जाण कुतर छींक ते निखर जाण ॥ ४ ॥ मंजार छींक ते मरणज करे, इसी छींक कष्टकारी सरे । वस्तु वेचता छींकज होय, आण्युं किरियाणुं मोंघु होय ॥५॥ वस्तु लेतां छींकज होय, बमणो लाभ सघलानो जोय । गई वस्तु जो जोवा- जाय, छींक होय तो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवा वस्त्र वली पहेरतां, छींक होय आगल अणछतां । भोजन होम पूजानुं काम, मंगलिक आणंद धर्म सुठाम ॥ ७ ॥ काम एटला कियाके अंत, वली क्रिया करावे खंत । रति स्नान करीने रहे, छींक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ ऋतुवतीने दीधे दान, पछी होय पुत्र निधान । वैरी जीती जाशुं जोय, छींके वैरी सबलो होय ॥ ९ ॥ रोगी काज वैद्य तेडवां, जातां छींके जो नवनवां । ते रोगीने मृत्यु जाणीये, काम विना वैद्य नाणीये ॥ १० ॥

वैद्य रोगीने घर आवतां, छींक होय औषध आपतां। रोगी तणो रोग ते समे, आहार लेते जमनुं गमे ॥ ११ ॥ व्यापारे लीधे व्यापार, छींक होय तो वृद्धि अपार। लेखुं शुद्ध दीधु रायने, छींके फोक थाय तेहने ॥ १२ ॥ पाणी पीतां अथ प्रियसंवाद, छींके दृष्टि दोष अनिवाद। नवे घर वसवा आवीये, छींक होय तो उचालीये ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहने आपतां, वली पृथ्वीमां धन दाटतां। रूप जोवा जाता वली, वृष्टि होय पुहवी मनरली ॥ १४ ॥ छींक शकुन नर जाणे जेह, पग पग संपद पामे तेह। छींक विचार जाणे जो कोई, वृद्धि ऋद्धि कल्याणज होय ॥ १५ ॥

---

(५५) निद्रा की सज्झाय।

सोई सोई सारी रयण गुमाई, वैरन निद्रा तूं कहां से आई ॥ टेक ॥ निद्रा कहे मैं बाली भोली, बडे बड़े मुनिजन की आंखों में ढोली ॥ सोई० ॥१॥ निद्रा कहे मैं तो जमकी रे दासी, एक हाथमें मुक्ति दूजे हाथ फांसी ॥ सोई० ॥ २ ॥ निद्रा कहे मैं तो कपटकी काकी, मद मच्छर मांहि नित रहूं छाकी ॥ सोई० ॥ ३ ॥ समयसुन्दर कहे सुनो भाई बनिया, आप डूबे सारी डूबगई दुनियां ॥ सोई० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

---

(५६) क्रोध की सज्झाय ।

कडुवारे फल छै क्रोधना, ज्ञानि इम बोले । रीस तणो रस जाणिये, हलाहल तोलें ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोडी पूरव तणुं, संजम फल जाय । क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपियो हुंतो, धरतो मन वैराग्य । शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाले । जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी । हानि करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साही । काया करजो निर्मली, उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

---

(५७) मान की सज्झाय ।

मान न कीजेरे मानवी, माने ज्ञान विनाश । ध्यान न पावेरे धर्मनो, मरीने दुर्गति जाय ॥ मा० ॥ १ ॥ जे नर सेज्यामें पोढतां, करतां भोग विलास । ते नर मरीने माटी थया, उपर ऊगाजी घास ॥ मा० ॥ २ ॥ जे नर रुचरुच बांधतां, लाल कसुंबल पाग । ते नर अटवी में पोढिया, चांचां मारे छे काग ॥ मा० ॥ ३ ॥ चोवा चन्दन चरचतां,

आरोगतां मुखपान । ते नर पोढ्या छे आगमें, काया काजल समान ॥ मा० ॥ ४ ॥ चोसठ सहस अंतेऊरी, पायक छिन्नुजी क्रोड । ते नर अंते जी एकला, चाल्या सहु ऋद्धि छोड ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे शिर छत्र परावतां, चांवर वीजंता सार । ते नर पोढ्या छे काठमें, उपर डांगारी मार ॥ मा० ॥ ६ ॥ दीपक कर कर पोढ़तां, फुलडा सेज बिच्छाय । ते नर मरीने माटी थया, हांडा घटे कुंभार ॥ मा० ॥ ७ ॥ यदुपति सरिखाजी चल गया, जुओ कृष्णमुरारी । वन कौसांबी जी एकला, हणिया बाण हजारी ॥ मा० ॥ ८ ॥ डोढा डोढा जी चालतां, निरखता वली छाय । पहेले पहोरे जी दीसतां, छेल्ले दीसेजी नाय ॥ मा० ॥ ९ ॥ गरीब लोकोने खोसतां, डरतां सब सुनाय । रावल रोक्या जी दुःख पड्या, सोच करे मन माय ॥ मा० ॥ १० ॥ धर्मी नर जीव इहां रह्यां, साथे पुण्यने पाप । कुण काजे कर्मज बांधिया, भुगते एकलो आप ॥ मा० ॥ ११ ॥ धर्म विहुणी जावे घडी, निश्चय निष्फल जाय । थोडे जीवरे कारणे, मुंझ रह्यो ललचाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ नोवत घुरतीजी बारणे, शर-णाई शंखभेर । काल तिणाने जी ले गयो, नहीं कोई लायोजी घेर ॥ मा० ॥ १३ ॥ धमण धमंती जी रह गई, बुझ गई जी अगार । एरण ठमकोजी रहगयो, उठ लग्योजी लुहार ॥ मा० ॥ १४ ॥ सीरख पथरणेजी पोढतां, तेल फुलेल

लगाय । एक दिन ऐसीजी बनगई, कुतग काग न खाय ॥ मा० ॥ १५ ॥ मनसा तारीजी वश करो, जिम पामे सुख-सेण । सास नगागजी कुचकका, बाजत हैं दिनरेण ॥ मा० ॥ १६ ॥ पर जाले पाछा वल्या, कुंकुमवरणीजी देह । जलमें पेसे सीचोसीया, धिग् धिग् कर्माने नेह ॥ मा० ॥ १७ ॥ मानी नर अब मानी थया, करतां आगेगी नींद । इम जाणी तुमे जिनधर्म करो, आदरो पुण्यनुं काम ॥ मा० ॥ १८ ॥ सद्गुरु सहु संतोपिया, छकायना दश बोल । साधु श्रावक धर्म पाल जो, मुक्ति तणी एछे पोल ॥ मा० ॥ १९ ॥ कुगुरु कुमार्ग घालसी, रखे पातरो जेह । हांसो धर्मनो मतकरो, नाखे नारकी तेह ॥ मा० ॥२०॥ आतंक भूख तीरसा सहो, शीत ताप दुःख ठोर । धरती करवत सारखी, वेदन कठिन कठोर ॥ मा० ॥ २१ ॥ पाप चितारोजी पाछला, हिंसा झूठ म भाख । संगत कीवि पर-नारनी, लागे दोप अनंत ॥ मा० ॥ २२ ॥ वे दिन दोराजी आवसी, करतां लोहने लाल । देख्या हिवडोजी कंपसी, पडसी मुद्गररी मार ॥मा०॥ २३ ॥ हसतां कर्मज बांधिया, रोया छूटेजी नाय । सद्गुरु करे चितारणी, चित्त चेतो मनमाय ॥ मा० ॥ २४ ॥ परदे पडंती पद्मणी, सजती सोले सिणगार । पाप तणा फल प्रगटीया, घर घररी पणि-यार ॥ मा० ॥ २५ ॥ चिहुं दिसि हुंडीजी चालती, हींचता

हींडोला खाट । पुण्यरो संचो पूरो हुवे, कवडी मांगे छे हाट ॥ मा० ॥ २६ ॥ आगे चाकर ओलने, अब लख तणा असवार । पाप तणां फल प्रगटीया, आणे इंधन भार ॥मा० ॥ २७ ॥ राज सधनने कुटुंबना, किसो करोरे अहंकार । मेला मांडया छे हाटमां, विखरंता नहीं वार ॥मा०॥२८॥ पृथ्वी पाणी अग्नि वायुनो, वनस्पति त्रसकाय । ए राख्यां धर्म उपजे, दुःख दारिद्र टल जाय ॥ मा० ॥२९॥ तृष्णा तजोरे पापनी, वात करो हँस बोल । निंदा मत करजो पारकी, टालो आत्मदोष ॥ मा० ॥ ३० ॥ कूड कपट सब त्यागके, ध्यान धरो नवकार । रात्रि भोजन परिहरो, जीव होवे उद्धार ॥ मा० ॥ ३१ ॥ शीयल व्रत संजम तप तपो, निर्मल थई दोष निवार । पूजा करो भगवंतनी, अच्छी जुगत बनाय ॥ मा० ॥ ३२ ॥ इणविध धारो तो सुख लहो, कीसो करो अहंकार । लोक में वासी मेला मिल्या, देखीने नायो ज्ञान ॥ मा० ॥ ३३ ॥ तिहां पण सुख संसारना, रत्नजडित आवास । गेणा गांठाजी नित नवा, अधिक ज्योत प्रकाश ॥ मा० ॥ ३४ ॥ सामायिक पोसह करो, सद्गुरु सुणो व्याख्यान । धर्मसुं प्रीति राखजो, पहुंचशो अमर विमान ॥ मा० ॥ ३५ ॥ इति ॥

---

(५८) मान की सज्झाय ।

रे जीव मान न कीजीये, माने विनय न आवेरे । विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावेरे ॥रे०॥ ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे । मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते किम लहिये युक्तिरे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारीरे । माने गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारीरे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्योरे । दुर्योधन गरवे करी, ते अंते सवि हार्योरे ॥रे०॥४॥ मूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटोरे । उदयरत्न कहे मानने, देजो तमे देशवटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

(५९) माया (कपट) की सज्झाय ।

समकितनुं मूल जाणियेजी, सत्य वचन साक्षात । साचामां समकित वसेजी, मायामां मिथ्यात्वरे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ टेक ॥ मुख मीठो जूठो मनेजी, कूड कपटनोरे कोट । जीभें तो जी जी करेजी, चित्तमांहि ताके चोटरे ॥प्रा०॥२॥ आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास । मनसुं राखे आंतरोजी, ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहसुं बांधे प्रीतडीजी, तेहसुं रहे प्रतिकूल ।

मेल न छंडे मन तणोजी, ए मायानुं मूलरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी, मित्रसु राख्योरे भेद। मल्लि जिनेश्वर जाणजोजी, ते पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांभलोजी, मेलो मायानी बुद्धि। मुक्ति पुरी जावा तणोजी, ए मारग छे शुद्धरे ॥प्रा०॥६॥इति॥

---

(६०) माया (धन) की सज्झाय।

माया कारमीरे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ मा० ॥ ए टेक ॥ मायाये वाह्या जगत विलुद्धा, दुखिया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी। वली विशेषे अतिघणी व्यापे, घरडाने झाजेरी ॥ मा० ॥ २ ॥ योगी जंगम यति संन्यासी, नग्न थई परवरिया। ऊंधे मस्तक अग्नि धखंती, मायाथी नवि डरिया ॥ मा० ॥ ३ ॥ माया मेली करी बहु भेली, लोभे लक्षण जाय। चोर डरे धरतीमां घाले, ऊपर विषधर थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण दूर देशान्तर, अटवी वनमां जाय। प्रवहण बैसी द्वीप द्वीपान्तर, सायरमां जंपाय ॥मा०॥ ५॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी, सत्यघोष कहावे। रतन देखी मन तेहनुं चलिउं, मरीने दुर्गति जावे ॥ मा० ॥६॥ लब्धिदत्त मायाये नडीयो, पडीयो समुद्र मझार। मुख माखणीउं थईने मरीयो, पडीयो नरक दुवार ॥ मा० ॥ ७ ॥ इंद्रे तो

सिंहासन थापी, शंभुये माया राखी । नेमीसर तो माया मेली, मुगतिमां थया साखी ॥ मा० ॥ ८ ॥ मन वचन कायाए माया, छोडी वनमां जाय । धन्य धन्य तेह मुनी-सर जेहना, तीन भवन गुण गाय ॥ मा० ॥ ९ ॥ एहवुं जाणीने भवि प्राणी, माया छोडो अलगी । समयसुंदर कहे सार छे जगमां, धर्म रंगसुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥इति॥

---

(६१) लोभ की सज्झाय ।

तुमे लक्षण जोजो लोभनारे, लोभे जन पामे खोभ-नारे । लोभे डाह्या मन डोहला करेरे, लोभे दुर्घाट पंथे संचरेरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहना लेउं भामणारे, वलि पाय नमि करुं खामणारे । लोभे मरजादा न रहे केहनीरे, तुमे संगति मेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभे घर छोडी रणमां मरेरे, लोभे ऊंच ते नीचुं आचरेरे । लोभे पाप भणी पगला भरेरे, लोभे अकारज करतां न ओसरेरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोभे मनडुं न रहे निर्मलुरे, लोभे सगपण नाशे वेगलुंरे । लोभे उन्हो प्रेत निपावटुंरे, लोभे धन मेले वहु एकठुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोभे पुत्रने पिता हणेरे, लोभे हत्या पातिक नवि गणेरे । ते तो दाम तणे लोभे करीरे, उपर मणिधर थाये ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोभेने

थोभ दिसे नहींरे, एहवुं सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरे। लोभे चक्री संभूम नामे जुवोरे, ते तो समुद्रमां बुडी मुवोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणी लोभने छंडजोरे, एक धर्मसुं ममता मंडजोरे। कवि उदयरत्न भाषे मुदारे, वंदुं लोभ तजे तेहने सदारे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

---

(६२) वीश स्थानक तप की सज्झाय।

श्रीसीमंधर साहेब आगे ॥ एदेशी ॥ अरिहंत पहेले स्थानक गणीये, वीजे पद सिद्धाणं। त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमें पद थेराणंरे। भविया वीश स्थानक तप कीजे ॥ ओली वीश करीजेरे भविया, गणणुं एह गणीजेरे भविया, जिम जिनपद पामीजेरे भविया, नरभव लाहो लीजेरे ॥ भविया वीश स्थानक तप कीजे ॥ ए टेक ॥ उवज्झाय छट्ठे सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण। नवमे दंसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमें जाणरे ॥ भ० वी० ॥ २ ॥ बारमे बंभवय धारीणं, तेरसमे किरियाणं। चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें नमो जिणाणंरे ॥ भ० वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीये, अठारमें नाणस्स। ओगणीशमे नमो सुयस्स संभारो, वीसमें नमो तित्थस्सरे ॥ भ० वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देववंदन, गणणुं दोय हजार। संघ विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचाररे ॥ भ० वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

(६३) [1]इलाची पुत्रकी सज्झाय।

नाम इलापुत्र जाणीये, धनदत्त सेठनो पूत। नटवी देखीने मोहीयो, नहीं रह्यो घर सूत ॥ १ ॥ कर्म न छूटेरे प्राणीया, पूरव नेह विकार। निज कुल छंडीरे नट थयो, नहीं आणी शरम लगार ॥ कर्म० ॥ २ ॥ मातपिता समझावतां, सुण सुण हमारा पूत। थोडे जीवनरे कारणे, लागे कुलमांरे छूत ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ मात पिता समझावतां, सुण सुण जायारे पूत। और नारी परणाविसुं, इणसुं अधिक सरूप ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ कर जोडी घरणी कहे, सुण सुण वालम वात। परणीने किम छोडस्यो, मत घालो किणने घात ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ नैण झरे ज्युं वादली, छाती भर भर आय। भर योवनमें छोडने, वालम मत जाय ॥ कर्म० ॥६॥ वलती कामन इम कहे, ऊभी हाथज जोड़। राजाने राणी चालिया, छोड़ गया लाख क्रोड ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ नाज तो खावेरे नहीं, पोढ्यो नहीं महेला मांहि। धनदत्त सेठ तिहां आवियो, कहे थारे मननीरे वात ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ कुंवर कहे सुण वापजी, हुं नहीं रहुं घर मांहि। नाज तो जब खावसुं, द्यो नटवी परणाय ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ धनदत्त सेठजी चालीया, आया नटवारे पास। सुण सुण नटवारे विनति, माहरे तोसुरे काम ॥कर्म०॥१०॥ वेटी दीजेरे आपणी, पर-

---

१ इस सज्झाय में अधिक गाथा क्षेपक मालूम होती है।

णावुं मुझ पूत । देव कुंवर सरिखो देहलो, राखो मुझ घर सूत ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ वलतो नटवोरे इम कहे, सुण सुण सेठजी वात । बेटी कीमरे दीजीये । लागे कुलमेंरे दाग ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ हीरा मोतीरे लीजीये, माणक पन्नारे लाल । बेटी दीजेरे आपणी, सारो हमारो काज ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ वलतो सेठजी इम कहे, सुण सुण नायारे वात । जे कुल छोडेरे आपणो, तो नटवी आवे हाथ ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ कडा मोतीरे उतारीया, उतारी कसुंबल पाघ । माता सुणीरे वातडी, आइ पुत्रके पास ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ नवरे महीना राखीयो, जीव गरभरे मांहि । बूढा पणेरे मांहिने, दुःख देई मत जाय ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ सुख तो माहरे सुवाणीयो, सोती आलेरे मांहि । बूढापणमें छोडने, दुःख देई मत जाय ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ छोटी पहेरीरे कंचणी, उतरीयो तीणवार । छोडीया मंदिर मालीया, वली भलो परिवार ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ घर छोडीने चालीयो, आयो नटवीरे पास । कला शीखेरे नट तणी, लाधो वंशरे हाथ ॥ कर्म० ॥ १९ ॥ इकपुर आयोरे नाचवा, ऊंचो वंश विशेक । राय तिहां आयोरे देखवां, मिलीया लोक अनेक ॥ कर्म० ॥ २० ॥ दोय पग पहेरीरे पावडी, वांस चढ्यो गजगेल । निराधार उपर नांचतो, खेले नवां नवां खेल ॥ कर्म० ॥ २१ ॥ ढोल बजावेरे नटवी, गावे किन्नर साद । पाय-

तल घूघरां घमघमे, गाजे अंबर नाद ॥ कर्म० ॥ २२ ॥ नरपति सोचेरे तव तिहां, नटवी देखीरे पाय । ऐसी होय जो माहरे, जनम सफल हुय जाय ॥ कर्म० ॥ २३ ॥ राय तिहां नटवीरे देखने, लुब्ध्यो नटवीनी साथ । जो नट पडेरे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ कर्म० ॥ २४ ॥ दान न आपेरे भूपति, नट जाणे नृप वात । हूं धन वंछुरे रायनो, राय वंछे मुझ घात ॥ कर्म० ॥ २५ ॥ तिहां एक मुनिवर पेखिया, धन धन साधु अणगार । धिक् धिक् विषयी जीवने, इम पाम्यो वैराग्य ॥ कर्म० ॥ २६ ॥ संवर भावेरे केवली, ततखिण कर्म खपाय । केवल महीमारे सुर करे, लब्धिविजय गुणगाय ॥ कर्म० ॥ २७ ॥ इति ॥

---

(६४) आशा की सज्झाय ।

आशा औरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे ॥ भटके द्वार द्वार लोकन के, कूकर आशा धारी । आतम अनुभव रसके रसिया, उतरे न कबहु खुमारी ॥ आशा० ॥ १ ॥ आशा दासीके जे जाया, ते जन जगके दासा । आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासा ॥ आशा० ॥ २ ॥ मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म-अग्नि परजाली । तन भाठी अवटाई पिये कस, जागे अनुभव लाली ॥ आशा० ॥ ३ ॥ आगम पियाला पियो मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा ।

आनन्दघन चेतन व्है खेले, देखे लोक तमासा ॥ आशा० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

(६५) आयुष्य की सज्झाय।

कह्यो मान मीजाजी, जोवन जावेगा छिनमें छोडके। रंगी चंगी सुंदर काया, देख छवी इन तनकी। टेढी पगडी माग सुहाली, कर रह्यो मोझां मनकी ॥ क० ॥ १ ॥ मेला खेला तीज तमासा, नाटक देखण जावे। परनारी से प्रीत करके तूं, कुलको कलंक लगावे ॥ क० ॥ २ ॥ हाड मांसका ग्रन्थां पिंजरा, विष्टा केरी कोठी। नारी दीपक नरक ले जावे, क्या छोटी क्या मोटी ॥ क० ॥ ३ ॥ गर्भावास-में ऊंधो लटक्यो, दुःख अनन्ता पाया। भूल गया वे दिन जोवनमें, पुद्गल प्रेम लगाया ॥ क० ॥ ४ ॥ काल आनके दोलो फिरसी, किसके शरण जासी। ज्ञान सुधारस प्याला पीकर, काटो मोहकी फांसी ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

(६६) निंदा की सज्झाय।

निंदा म करजो कोईनी पारकीरे, निंदाना बोल्या महा-पापरे। वयर विरोध वाधे घणोरे, निंदा करतां न गणे माय-बापरे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलती कां देखो तुम्हेरे, पगमां

वलती देखो सहु कोयरे। परना मेलमां धोया लूगडांरे, कहो केम ऊजलां होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणोरे, निंदानी मूको परी टेवरे। थोडे घणे अवगुणें सहु भर्यारे, केहनां नलीयां चूए कहेनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे तो थाये नारकीरे, तप जप कीधुं सहु जायरे। निंदा करोतो करजो आपणीरे, जेम छूटकवारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणोरे, जेहमां देखो एक विचाररे। कृष्णपरें सुख पामशोरे समयसुंदर सुखकाररे॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

(६७) वचन विचार कर न बोलनेका फल की सज्झाय।

वापडलीरे जीभलडी तूं, का नवि बोले मीठुं। विरुआ वचन तणो विरुओ फल, ते शुं ते नवि दीठुंरे ॥ वा० ॥१॥ अन्न पान अणगमतुं तुझने, जो नवि रुचे अनीठुं। अणबोलावी तूं शामाटे, बोले कुवचन धीठुंरे ॥ वा० ॥ २ ॥ अग्नि दह्यं नव पल्लव थाये, कुवचन दुर्गति घाले। अग्नि थकी अधिकुं कुवचन, तेतो क्षणक्षण शालेरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ क्रोध भर्युंने कूड बोले, अभिमानी अणशक्ति। आप तणां अवगुण नवि देखे, ते किम जाशे मुक्तिरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ ते नर

मान महोत नवि पामे, ते नर होवे मुखरोगी। तेहने कोई नवि बोलावे, ते तो प्रत्यक्ष शाखीरे ॥ वा० ॥ ५ ॥ जन्म जन्मनी प्रीति विनाशे, कडवे वयणे बोले। मीठा वयण थकी विण गरथे, जग लीजे सवि मोलेरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ आगम वयण तणे अणुसारे, जे भवि रुडुं भाखे। प्रकट थई परमेश्वर तेहनी, लाज जगतमें राखेरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ सुवचन कुवचननो फल जाणी, गुण अवगुण मन आणी। वात कहिजे अमीय समाणी, लब्धि कहे सुण प्राणीरे ॥ वा० ॥ ८ ॥ इति ॥

जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रंथमाला की पुस्तकें ।

१–युगादि जिन देशना—इसको खरतरगच्छीय विदुषी साध्वी श्री विनयश्रीजी महाराजने बहुत सरल हिन्दी भाषामें लिखी हैं। इसमें श्री आदीश्वर भगवान्ने अपने ९८ पुत्रोंको प्रतिबोध करने के लिए क्रोध आदि कषायों के विजय के विषयमें जो देशना दी है, यही अनेक रसिक कथा रूप है। यह किताब **"जौहरी सेठ सौभाग्यचन्दजी सुगनचन्द जी भूरगढ़, जौहरीबाज़ार, जयपुर सिटी"** के ठिकाने पोष्ट खर्च के लिये छः आने की पोष्ट टिकिट भेजने से भेंट मिल सकेगी।

२–खरतरगच्छीय विधिपूर्वक पंच प्रतिक्रमण सूत्र—प्रतिक्रमणमें जो जो सूत्र बोले जाते हैं, उसी प्रकार बारंबार उसीही सूत्रों को क्रमसे लिख दिया है। जिसको प्रतिक्रमण और विधि याद न हो वह भी बांचकर प्रतिक्रमण कर सकता है। तथा सविस्तर पौषधविधि, पच्चक्खान, सप्तस्मरण, भक्तामर आदि कईएक प्रभाविक स्तोत्र, पंच तिथियो के स्तवन स्तुति चैत्यवंदन, गोतमस्वामी का और शत्रुंजय का रास आदि कई विषय दिये गये है। पृष्ठ संख्या ३७६ पक्की जिल्द कीमत रू० १–४–० पोष्ट खर्च अलग।

मैनेजर—
जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रंथमाला,
कुंदीगर भैरवजी का रास्ता, जैन धर्मशाला
–जयपुर सिटी, (राजपूताना)